भूमिका

मायावी लोगों ने किसी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा है। उन्हें जहां कहीं भी जरा सी आड़ मिल जाती है छिप बैठते हैं। अनेकों चोर, उठाईगीरे डाकू, हत्यारे, ठग, दुराचारी, व्यसनी नशेबाज एवं हरामखोर मनुष्य कानूनी पकड़ तथा जनता की आंखों से बचने के लिए पवित्र साधु वेष में जा छिपते हैं और इस आड में बैठे बैठे मौज करते रहते हैं। खुराफाती दिमागों में यह विशेषता होती है कि वे चुप नहीं बैठ सकते। गुलछर्रे उड़ाने के लिए उनका दिमाग कोई न कोई तरकीब ढूंढ निकालता है। सन्त वेश की आड में छिप बैठने से ही उन्हें सन्तोष नहीं होता वे आगे धावा बोलते हैं और जनता के भंडार से यश तथा धन की लूट मचा देते हैं।

ऐसे लोग अपना प्रधान हथियार चमत्कारों को बनाते हैं। योग शास्त्रों में ऐसे वर्णन आते हैं कि योगियों को ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होती है। और वे अलौकिक चमत्कारी करतब दिखा सकते हैं, यह उक्ति न केवल पुस्तकों में वर्णित है वरन् जन साधारण में इसका विश्वास भी बहुत गहरा जमा हुआ है। इस स्थिति से लाभ उठाकर धन और यश लूटने के लिए धूर्तलोग अपने आपको पहुचा सिद्ध साबित करने का प्रयत्न करते हैं। चूंकि उनमें तप तो होता नहीं त्याग, वैराग्य, साधना और तपश्चर्या के बिना सच्ची सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। ऐसे धूर्त लोगों में प्रत्यक्ष अनुभव में आये हुए दुराचारों में से कुछ को इस पुस्तक में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि यह पुस्तक धूर्तता और अन्ध विश्वास के विनाश में सहायक होगी।

—श्रीराम शर्मा आचार्य,

योग के नाम पर मायाचार



सत्य की शोध के लिए सुदूर स्थानों में जो दीर्घकालीन पर्यटन हमने किया है उसमें जहां सत्पुरुष और सच्चे महात्माओं का अनुग्रह प्राप्त किया है वहां धूर्त लोग भी कम नहीं मिले हैं। इन लोगों का वैभव काफी बढ़ा देता है। हजारों लाखों रुपयों की गुप्त प्रकट सम्पत्तियां उनके पास देखी हैं। इन लोगों के रहस्यों का पता प्राप्त करना सहज काम नहीं है। भोले भाले लोग तो इनके चंगुल में ऐसे फँस जाते हैं कि जन्म भर उनसे छूट नहीं सकते काफी सतर्कता और सूक्ष्म बुद्धि द्वारा, बहुत दिन तक बारीकी के साथ निरीक्षण करने पर ही कुछ पता चल पाता है। हमें इस प्रकार के जो भेद मालूम हुए हैं पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं।

अब तक इन भेदों को हमने बहुत ही गुप्त रखा था। कारण यह था कि एक बार एक व्यक्ति से हम इन भेदों की चर्चा कर रहे थे, तो वह बहुत प्रभावित हुआ। मजाक में नहीं वरन् बहुत ही गंभीरता से उसने कहा कि—यदि आप इस प्रकार की दस पांच विद्यायें मुझे सिखादें तो मैं एक दो वर्ष में ही लाखों रुपया कमा सकता हूं। उस पर हम चुप हो गये दूसरे दिन वह आदमी फिर हमसे बहुत गंभीरता पूर्वक मिला और अपनी पूरी योजना बना कर लाया। उसने कहा कि आप चार पुरुष से करते हैं तो

आप अलग रहिए, मुझे वह सब बातें सिखा कर दीजिए, आमदनी का आधा भाग मैं आपको देता रहूंगा। किसी को पता भी न चल पावेगा और आप थोड़े ही दिनों में लखाधीश बन जावेंगे।

इस प्रस्ताव ने हमारे मस्तिष्क में एक नयी सावधानी पैदा की, वह यह कि यदि इस प्रकार के भेदों को लोगों ने मालूम कर लिया तो धूर्त लोगों की पांचों घी में होंगी। वे उसी रास्ते को अपनालेंगे जिसे कि उन "सिद्ध" लोगों ने अपनाया था। इस विचार ने हमें बहुत सावधान कर दिया। और यह प्रतिज्ञा करली कि कभी किसी को यह बातें न बतावेंगे। उस प्रस्ताव के करने वाले को भी हमने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया। जिन्हें हमारी यात्राओं के वर्णन मालूम थे ऐसे निकटवर्ती मित्रों ने भी ऐसी चमत्कारी कलाएं बताने का हमने आग्रह किया पर उन्हें भी अब तक कुछ नहीं बताया गया, अब तक ऐसे अनेकों अनुरोध समय २ पर टाले जाते रहते हैं। किसी पर यह भेद प्रकट नहीं किये गये।

इन धूर्तताओं के विरुद्ध दूसरी ओर हमारे मन में तीव्र घृणा एवं कड़े विरोध की भावना काम करती रहती रही है। जिन लोगों के यहा यह पाखण्ड प्रयुक्त होते हैं उनका समय समय पर काफी विरोध भी सब सम्भव उपाय से हमने किया है। यह इच्छा हमें बहुत दिनोंसे है कि जनता को इस दिशा में शिक्षित किया जावे ताकि वह ऐसे भ्रम और माया जालों से बच सके। इस सम्बन्ध में काफी समय तक गम्भीर विचार करने और विज्ञ पुरुषों से सम्मति लेने पर हमने उस पूर्व निश्चय को बदलना पड़ा। गुप्त रखने से

हमारे द्वारा नये जादूगर पैदा न होंगे यह ठीक है। पर जो लोग इस समय धूर्तता कर रहे हैं, या लोग अन्य मार्गों से उन बातों को सीख कर भविष्य में मायाचार करेंगे उनकी रोक कैसे होगी? इस दृष्टि से विचार करने पर यह मत स्थिर किया गया कि इन रहस्यों को सार्वजनिक रूप से जनता पर प्रकट कर दिया जाय। ऐसा करने से अनेकों भोले भाले लोग सावधान हो जायँगे और तथाकथित सिद्धों को चंगुल में फँसने से पूर्व यह देख लिया करेंगे कि वे किसी के द्वारा अनुचित रीति से ठगे तो नहीं जा रहे हैं। दूसरी ओर धूर्त लोगों का रास्ता भी बन्द होगा वे सोचेंगे कि यह सब बातें जनता पर प्रकट हो चुकी है इसलिए हमारी पोल आसानी से खुल जायगी, यह भय उन्हें कुचाल छोड़ने के लिए मजबूर करेगा। इन बातों पर विचार करके यह इन पृष्ठों में यह सब बातें प्रकट की जा रही हैं जिन्हें अब तक हमने सावधानी के साथ छिपाये रखा था।

किन्तु किसी को इन पंक्तियों से भ्रम में न पड़ना चाहिये। योग साधना का कोई अलौकिक फल नहीं है, या जितने भी दिव्य शक्ति सम्पन्न महात्मा हैं वे सभी धूर्त हैं, ऐसा हमारा अभिमत या धारणा नहीं है। अलौकिक दिव्य पुरुष भी इस भूतल पर हैं और होते हैं। उनकी महत्ता और महिमा को कोई कम नहीं कर सकता। सत्पुरुषों, दिव्य आत्माओं तथा धूर्तों में एक अन्तर स्पष्ट है उसे ध्यान में रख कर सत् असत् का निर्णय आसानी से किया जा सकता है। सत् पुरुष सरल मन होते हैं, सबको वे अपने आत्मीयों के समान प्यार करते हैं, निष्कपट और निस्पृह भाव से बात करते हैं। इनके यहाँ छिपाव की कोई बात नहीं होती। इसके

विपरीत धूर्तों को अपनी माया छिपाने के लिए पग-पग पर दुराव एव आडंबर करना पडता है। जहां दुराव एवं आडंबर हो, तथा भेद रखा जाता हो वहा सन्देह की काफी गुंजायश होती है वहॉ सावधानी रखने की आवश्यकता होती है। पैसें का अनाप शनाप खर्च, अनावश्यक बातों की भरमार राजसी ठाटबाट, अमीरों जैसा आहार-विहार, आलस्य प्रमाद की अधिकता, तत्वज्ञान की अपेक्षा मनोरंजन के समारोह, तुच्छ विषयों पर विशेष चर्चा, आत्म प्रशंसा, आदि बातें जहां अधिक दिखाई देती हों वहा समझना चाहिए कि यहां कुछ दाल में काला हो सकता है। वहां पैर फूंक २ कर रखना चाहिए। जहां सादगी, सीधापन, सरलता, निष्कपटता एव खुला दरबार हो यहां सचाई की स्थिति अधिक होती है। फिर भी दोनों ही स्थितियों में विवेक पूर्वक नीर क्षीर को देखने की आवश्यकता है।

गत बीस वर्षों में भारत के लगभग सभी प्रदेश मे कई बार आध्यात्मिक खोजों के सिलसिले में हमने भ्रमण किया है। अनेक भले बुरे अपने ढंग के अनेकों विचित्र विचित्र व्यक्तियों से हमें सम्पर्क हुआ है। उनमें से इस पुस्तक में केवल ऐसे व्यक्तियों की कटु स्मृतिया लिखी जारही हैं, जो योग के नाम पर चालाकी से अपना दंभ चलाते थे। अन्य प्रकार के अनुभवों को आगे फिर कभी प्रकट करेंगे। इस पुस्तक के लेखों का प्रयोजन यह है कि पाठक सावधान रहें और बिना परीक्षा किये किसी नकली 'सिद्ध' के चगुल में न फंसें। अब हम पाठकों के समाने अपने कुछ अनुभव उपस्थित करते हैं।

(१) सट्टा बताने वाले पीर।

बंगाल प्रान्त के मैमनसिंह जिले में एक मुसलमान साधु की गुफा है। उन्हें सोफा पीर कहते हैं। सड़क से कोई डेढ़ मील दूर पर यह गुफा है। इन पीर साहब के बारे में दूर दूर तक यह प्रसिद्ध है कि वे जिस पर प्रसन्न होजाते हैं उसे सट्टे के ठीक नम्बर बतादेते हैं। कलकत्ता के आस-पास सट्टा लगाने का बड़ा चलन है। मंगल और शुक्र को सट्टेबाजों के यहां नम्बर खुलता है और जिसका दांव आजाता उसे एक के बदले सौ रुपये मिलते हैं। सट्टा लगाने का प्रचार बड़े शहरों से लेकर छोटे ग्रामों तक में है। सट्टे के नम्बर पूछने के लिए इन पीर साहब के पास सैकड़ों आदमियों का मेला लगा रहता है। जो भी जाता है भेंट पूजा लेकर जाता है। मेवे मिठाई और फलों का ढेर लगा रहता है। पीर साहब ने सैकड़ों आदमियों को अब तक सट्टा बताया है वे जिस पर प्रसन्न हो जाते हैं उसे निहाल कर देते हैं ऐसी विश्वास पीर साहब के प्रायः सभी मुरीद मन में धारण किये रहते हैं।

बड़ी कठिनता से उस मुश्किल रास्ते को पार करके हम वहां पहुंचे। दूर देश से आये हुए, एक प्रतिभाशाली, विद्वान, ब्राह्मणकुमार का समाचार उनके शिष्यों ने पीर साहब को सुनाया, उन्होंने हमारे ठहरने और भोजन विश्राम की समुचित व्यवस्था करदी। दूसरे दिन प्रात का उन्होंने भेंट के लिए बुलाया। वार्तालाप करके वे मुग्ध हो गये। एकान्त वार्ता के लिए वे बहुत ही थोड़ा समय लोगों को देते थे पर मुरीदों की प्रतीक्षा की परवा न करके हु

ढाई घंटे लगातार वे हमसे बातें करते रहे। पहली ही मुला-कात में पीर साहब बहुत प्रभावित होगये। वे सोचने लगे कि यह व्यक्ति मेरा शिष्य बन जावे तो मेरी पूजा प्रतिष्ठा और मान्यता में अनेक गुनी वृद्धि हो सकती है। अपने इन विचारों को वे मनमें रोक न सके दूसरे दिन उनने इने शब्दों में अपने मन की बात प्रकट करदी और साथ ही शिष्य होने का भारी आर्थिक प्रलोभन भी दिया।

अपना उद्देश्य दूसरा था। सत्य की शोध, एवं तथ्य की जानकारी, आत्मा का कल्याण यही अपनी आकांक्षा थी। धन, यश, या ऐश्वर्य की इच्छा से पीर साहब के पास जाने का प्रयोजन न था अभीष्ट प्राप्ति के लिए पीर साहब के पास ठहराना था सत्य का पता लगाना था। उत्तर में उनसे इतना ही निवेदन किया कि अभी मुझे आये हुए तीन ही दिन हुए हैं। कुछ समय अपने पास रहने का और विचार करने का, मुझे अवसर दें तो ही कुछ निश्चित उत्तर दे सकूंगा। पीर साहब सहमत होगये।

अब नित्य उनके पास बैठना अपना कार्यक्रम था। सारे दिन होती रहने वाली चर्चा को एकाग्रमन से किन्तु उपेक्षित मुख मुद्रा के साथ, सुनता था। कभी कभी पीर साहब को प्रसन्न रहने वाली फुलझड़ियां बीच बीच में छोड़ देता था जिससे उनकी कृपा अपने ऊपर ज्यों की त्यों बनी रहे। करामात का रहस्य अपने को जानना था, समस्त चित्त वृत्तियां उसी की खोज में लगी रहतीं।

तीन सप्ताह के निरंतर सूक्ष्म पर्यवेक्षण से वास्त-विकता का पता चल गया, पीर साहब के पास कोई सिद्धि न थी। वे सट्टे के नम्बर पूछने के लिए आये हुए मुरीदों

को मुट्ठी भर कर कोई चीज देते थे जैसे फूल, बताशे, मेवे आदि। मुरीद उन्हें चुपचाप गिनते और वही संख्या याद लेते। कभी २ कुछ गिनती सूचक वाक्य भी कहते रहते जैसे "२।३।२८।१२ यहां से तेतीस मील है। एक दिन यहां से सत्रह हिरनों का झुण्ड निकला था, एक शाल पचपन रुपये की होगी, आदि २।" बैठे हुए व्यक्ति मन इन अंकों से सट्टे के नम्बरों का अर्थ निकालते थे और दाव लगाते थे।

पीर साहब इस बात का ध्यान रखते थे, कि लोगों को भिन्न भिन्न नम्बरों का संकेत किया जावे। सट्टे में एक से लेकर सौ तक नम्बर आते हैं। मान लीजिए पांच सौ व्यक्ति आये। उनको अलग-अलग नम्बर बताये। पांच सौ व्यक्तियों को सौ नम्बर अलग २ बताये जावें तो पांच आदमियों का नंबर खुलेगा यह प्रतिदिन पांच व्यक्तियों को जरूर बताया गया होगा। इस प्रकार सात दिन में कमसे कम ३५ आदमियों का नंबर जरूर ठीक निकलेगा। ये पैंतीस आदमी भविष्य में अधिक लाभ की आशा से पीर साहब की भर पेट प्रशंसा करते और उन्हें भेंट पूजा चढ़ाते उन पैंतीस आदमियों की सफलता का ढोल चारों ओर पिट जाता। शिष्य लोग तिलका ताड़ बनाते, पैंतीस की जगह पर तीन सौ गिना देना उनके बायें हाथ का काम है। लोगों को गिना—पांच सौ, बताये दस हजार। इस प्रकार इस तरह प्रचार में तिल का ताड़ बनाने वाली गप्पें फैलाई जातीं। और पीर साहब की मान्यता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जाती। दूर दूर से बम्बई, कलकत्ता, कराची, मद्रास तक के सट्टोरिये, रुई बाज, तेजी, मंदी, हाजा सट्टा और फीचर लाटरी आदि के लिए पहुंचते। उनके पट्ट शिष्य ऐसे

लोगों के कान भरने, पट्टी पढ़ाने, प्रभावित करने और अच्छी भेंट पूजा पाने में बड़े चतुर थे। दिन भर चांदी कटती रहती। शिष्य लोगों के पौबारह रहते ।

जिन अधिकांश लोगों के पैसे व्यर्थ ही डूब जाते कुछ न मिलता वे बेचारे पेट मरोड़ कर चुप हो जाते। भाग्य का फेर , बुरे दिन, पीर साहब की सेवा पूजा में कमी, आदि अनेकों कारण असफलता के सोच लेते। और फिर उसी आशा तृष्णा में भटकते रहते। "शायद अब की बार हमें मिले" इसी आशा में सैकड़ों लोग वर्षों से उलझे हुए थे, काफी नुकसान उठा चुके थे। पर अपने दुर्भाग्य की बात किसी से कहने का उनमें साहस न होता था। दड़े के व्यापारी पीर साहब की कृपा से मालोमाल हो रहे थे नये-नये अड्डे खुलते जाते थे। पीर साहब की महिमा बढ़ाने और प्रशंसा करने के लिए उन लोगों ने वेतन भोगी ऐजेन्ट रख छोड़े थे जो दूर दूर तक पीर जी की प्रशंसा करके 'नये दाव लगाने वाले' तैयार करते थे। इस वृद्धि से दड़े के व्यापारी मालोमाल हो रहे थे।

यह सब दृश्य देख कर अपनी आत्मा तिल मिलाने लगी, जनता का मूल्यवान समय, हजारों रुपया प्रतिदिन नष्ट होता था, जुआ खोरी की शैतानी आदत बढ़ती थी, मिथ्या भ्रम और पाखंड फैलता है अपना उद्देश्य सत्य की शोध था, यहां शैतान का साम्राज्य छाया हुआ था। एक दिन अस्वस्थता का बहाना करके बिस्तर बगल में दबा कर वहां से चल दिया । पीर जी को एक अच्छा शिष्य हाथ से निकलने का दुख हुआ। उन्होंने फिर आने का आग्रह करते

हुए निकली थी। मैं दवा बनाने की करामात को नमस्कार करके आगे के लिए चल दिया।

(२) सोना बनाने वाले सिद्ध।

चम्पारन जिले में ऐसे महात्मा का नाम सुना था जो सोना बनाने की विद्या जानते हैं। उनके बारे में यह कहा जाता था कि वे किसी से मांगते कुछ नहीं जब शिष्य मंडली के तथा अपने खर्च के लिए रुपयों की जरूरत पड़ती है तो थोड़ा सा सोना बना लेते हैं और इस सोने को बाजार में भेज कर बिकवा देते हैं। उसी रुपये से उनका सब काम चलता है। ढूंढते २ हम इन सिद्ध जी महाराज के पास पहुंचे। देखने में वे तेजस्वी थे। भरा हुआ चेहरा, चमकीली आंखें, उठा हुआ शरीर, घनी दाढ़ी और जटाओं के बीच बड़ा सुहावना मालूम पड़ता था। उनकी जमात में कोई आठ दस उनके निजी शिष्य थे, दस बारह बाहर के सेवक उनके साथ थे, मैं भी इसी जमात में शामिल हो गया। अपनी विद्या, वाक्पटुता एवं व्यवहार कुशलता से वे लोग थोड़ी ही देर में प्रभावित होगये और खुशी २ अपने साथ रख लिया।

इन सभी लोगों का रहन सहन बड़ा ही खर्चीला था। भोजन में ऊंचे मिठाई, दूध, रबड़ी, भांग, ठंडाई की धूम रहती थी। दोनों वक्त भंग छनती थी जिसमें २०) प्रतिदिन से कम खर्च न होता होगा। जमात के हर आदमी के ऊपर दो तीन रुपया रोज से कम का खाने खर्च न था। गांजा और चरस की चिलमें बराबर चलती रहतीं। इस जमात में कभी कोई आध्यात्मिक प्रसंग या वार्तालाप होते देखा न

देखा वरन् बराबर कानाफूसी होती रहती। कोई किसी को अलग बुला कर कान पर मुंह रख कर फुसफुसाता कोई किसी के कान में बात करता। दिन भर गुप्त मंत्रणाएं होती रहतीं।

एक दो दिन रहने के बाद ही सभी लोगों से अपनी आत्मीयता बढ़ने लगी और उन गुप्त मंत्रणाओं एवं कानाफूसियों के लिए हमें भी पात्र मान लिया गया। पहले दिन हमने समझा था कि सोना बनाने के वैज्ञानिक भेदों पर यह लोग विवेचना करते होंगे, इसलिए इनकी वार्ता में प्रवेश पाने के लिए हमें अत्यधिक चतुरता पूर्ण प्रयत्न करने पड़ेंगे। पर दूसरे दिन यह भ्रम दूर हो गया। इस गुप्त बात-चीत का विषय केवल महात्माजी की प्रशंसा तथा उनके सोना बनाने की योग्यता की पुष्टि करना था। यह बातें प्रमुख शिष्यों द्वारा प्रचलित की जाती थीं। वे ऐसी घटनायें, कथा रूप में गढ़ते थे जिनमें यह बताया जाता था कि "इन सिद्धजी ने अमुक बार इस प्रकार प्रकार इतना सोना बना कर अमुक शिष्य को दिया था। अमुक दिन इतना सोना बनाया था। उस दिन बनाने में जो चीजें डाली थी उनमें से अमुक को तो हम जानते हैं अमुक रंग की दवा का नाम मालूम नहीं। इन महात्मा के गुरु जी और भी अधिक पहुंचे हुए थे, वे चिलम के छेद में तांबे के पैसे की रोक रखते थे और ऊपर से एक बूटी गाजे की तरह रख कर चिलम पीते थे, बस इतने में ही तांबे का पैसा सोने का हो जाता था। उस सोने के पैसे को गुरूजी उसी भगत को दे आते थे जिसके यहां आतिथ्य स्वीकार करते थे। यह वर्तमान गुरूजी उतने पहुंचे हुए नहीं हैं,

इनको सोना बनाने में बहुत सा सामान इकट्ठा करना पड़ता है तब कहीं कार्य पूरा होता है।" ऐसी ही अनेक बातें उस काना फूंसी का विषय होती थीं।

सिद्धजी के एक शिष्य ने कानाफूंसी करते हुए मुझसे कई बातें कहीं। उसने बताया कि (१) कलकत्ता के अमुक सेठ को महात्माजी ने वह विद्या सिखादी है वह अरबों रुपये का लाभ कर चुका है। (२) एक बार बम्बई का अमुक सेठ देवालिया होने जा रहा था वह दौड़ा हुआ आया और महात्माजी के चरणों पर गिर कर लाज बचाने की बात कही महात्माजी ने दया करके उस सेठ को बीस लाख रुपये का सोना बना कर दिया और शर्त कर ली कि इस समय तो अपना काम चलाले पर बाद में इस रुपये को धर्म कार्य में लगावें। प्रतिज्ञा के अनुसार वह सेठ अब तक बराबर इतने रु० साल का सदावर्त साधु महात्माओं को बांटता है। (३) मद्रास प्रान्त में एक बड़ा भारी मन्दिर बन रहा है जिसका खर्च इन महात्माजी ने ही दिया है। (४) यह महात्माजी अब तक कई आदमियों को यह विद्या सिखा चुके हैं पर साथ ही यह कह देते हैं कि यदि उसने किसी को बताई तो उसी क्षण उसकी मृत्यु हो जायगी। एक आदमी की प्रतिज्ञा तोड़ने पर तुरंत मृत्यु हो भी चुकी है। (५) महात्माजी से इस विद्या को वही ले सकता है जो उनको पूरी तरह से प्रसन्न करने के लिए तन मन धन से सेवा करना चाहिए। जब वे पूरी भक्ति देख लेते हैं तभी प्रसन्न होते हैं।

यह बातें इस ढंग से कहीं गई थीं मानो वह व्यक्ति स्वभाव वश सिद्धजी की ओर हमारे लाभ के लिए हमारी अभीष्ट पूर्ति में सहायक बनने के लिए कह रहा हो। इन्हीं बातों को

थे शिष्य लोग बाहरी आगन्तुक व्यक्तियों में गुपचुप रूप से फैलाते थे। आगत व्यक्ति अन्य आगत व्यक्तियों से कहते थे। इस प्रकार अनेकों मुखों से गुप्त रूप से एक ही बात की पुष्टि होते देख कर नये व्यक्ति का मनमें पूरा और पक्का विश्वास बैठ जाता था कि यहां सोना अवश्य ही बनाया जाता है और प्रयत्न करने पर मुझे भी वह विद्या प्राप्त हो सकती है। यह विश्वास मन में बैठ जाने पर वह व्यक्ति बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तैयार हो जाता था। बिना परिश्रम लाखों करोड़ों रुपये पाने का लोभ साधरण लोभ नहीं है इतने बड़े लोभ के लिए मनुष्य सहज ही अपना बहुत सा समय और धन खर्च करने को तैयार हो जाता है। लोभ से आतुर हुए मनुष्य की विवेक बुद्धि कुंठित हो जाती है, वह तर्क वितर्क करके वास्तविकता का परीक्षण करने में असमर्थ हो जाती है। इन काना फूंसी के प्रचार और षडयंत्र की वास्तविकता को न समझने वाले अनेकों आंख के अंधे और गांठ के पूरे मनुष्य वहां पहुंचते थे और अपना पैसा महात्माजी को प्रसन्न करने के लिए होली की तरह फूंकते थे। भक्त मण्डली में होड़ लगी रहती थी कि देखें कौन अधिक खर्च करे। इस होड़ाहोड़ी में एक से एक बढ़िया राजसी ठाठबाठ वहां जमा होते थे।

विश्वास और अविश्वास की भावनायें मेरे मन में द्वन्द मचा रही थीं। यदि सोना बनाना इन्हें आता है तो यह विद्या मुझे भी प्राप्त करनी चाहिए। यह लोभ अपने लिए भी कम न था, घर से ब्रह्म परायण होने निकला था। पर इस तथा कथित 'सोने की खोज' में वह इच्छा धुंधली पड़ गई। यदि यह विद्या मिल गई तो धन की प्रचुरता होने पर कैसे

बड़े बड़े काम करेंगे, ऐसी कल्पनायें इतने विशाल आकार में उत्पन्न होने लगीं जिनके पैर जमीन पर थे सिर आकाश में । इस सोने की खान में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से अपनी समस्त चतुराई और जागरूकता को एकत्रित करके मैं कार्य करने लगा ।

उस अवसर की बड़ी प्रतीक्षा थी जब महात्माजी सोना बनावें और अपनी आंखों उसे बनता देखकर कम से कम यह विश्वास कर सकूँ कि इनके पास यह विद्या वास्तव में है या नहीं । ऐसे अवसर दो चार महिने में कहीं एकबार आते थे । मुझे तीन महिने यहाँ ठहरना पड़ा, तब कहीं एक अवसर ऐसा आया । पारा, हड़ताल, तांबा, गंधक तथा अन्य कुछ जड़ी बूटियां जमा की गईं, एक गुप्त स्थान पर भट्टी तैयार की गई । सब चीजें कढ़ाई में डाल कर आग जला दी गई । मसाले पकने लगे, कुछ देर बाद इस सब को ठंडा किया गया और महात्माजी तथा उनके प्रधान शिष्य कढ़ाई में कुछ उलट पलट करते रहे, कुछ चीजें उसमें डालते तथा निकालते रहे ऐसा हमने दूर स्थान से देखा । रात को सबके सामने कढ़ाई उतारी गई । करीब तीन तोले सोना निकला । दूसरे दिन इसे बेचने बाजार भेज दिया गया जो बेचने गया था उसने करीब १००) सोने का तात्कालिक बाजार मूल्य महात्माजी के सामने रख दिया ।

इस क्रिया को देख कर अन्य श्रद्धालु भक्तों के मन में महात्माजी के लिए अनेक गुनी श्रद्धा उमड़ पड़ी । उस परख के लोगों में जो छिद्र और सन्देह थे वे उनकी दृष्टि पर पर्याप्त ही न थे । पर अपने में न तो अन्धश्रद्धा थी और सन्देहों के प्रति उपेक्षा भाव । दृष्टि दौड़ाने पर सन्देह हुआ

कि जब हम लोगों को हटाया गया था तब तांबा निकाल कर सोना डाल दिया होगा। पर निश्चय न हुआ कि वास्तविकता क्या है। निर्णय पर पहुंचने के लिए उनके प्रधान शिष्य से घनिष्ठता स्थापित की गई। वह लड़का कोई इक्कीस बाईस वर्ष का था दस वर्ष से महात्माजी की सेवा में था, उनकी सभी गुप्त प्रकट बातोंसे भली भांति परिचित था। मैंने ताड़ने की कोशिश की कि इसे किस प्रकार अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। लड़का तरुणाई में प्रवेश हो रहा था, उसके चेहरे और हाव भावों से प्रकट होता था कि काम वासनाएं उसे बुरी तरह बेचैन किये हुए हैं। उसकी इस कमजोरी को ताड़कर मैंने एक दिन एकान्त में लेजा कर चुपके से उससे कहा कि आप चाहे तो मैं एक अत्यन्त स्वरूपवती तरुणी से विवाह करा सकता हूं। पहले तो वह चौंका पर पीछे अपनी नेक नीयती, उसके प्रति अपने प्रेम एवं विश्वास प्रकट करने पर वह तैयार होगया। पहली बार कहने पर उसे भय था कि मेरे मन की बात प्रकट हो जाने पर महात्माजी की कृपा और यहाँ के ऐश आराम से हाथ धोना पड़ेगा। पर पीछे जब उसके मनमें कुहराम मचाने वाली कामेच्छा को तृप्त करने का लोभ सामने आया तो उसके आगे उसे शिष्यता का वैभव तुच्छ जँचने लगा। विवाह का प्रलोभन देने वाला मैं, उसे देवता सा जँचने लगा। वह मुझे प्रसन्न करके मेरी सहायता से सुन्दरी वधू प्राप्त करने के लिए छाया की तरह मेरे पीछे पीछे फिरने लगा।

तीर निशाने पर लगा उस प्रमुख शिष्य से आत्मीयता गांठ लेने पर हम दोनों में अपनी अपनी अन्तरंग बातें कहने सुनने का काम चलने लगा। एक दिन मैंने उससे

महात्मा जी के सोना बनाने का रहस्य पूछा। पुरानी आदत के अनुसार पहले तो वह कुछ झिझका पर पीछे हमारे प्रोत्साहन देने पर उसने सारा भेद खोल दिया। उसने बताया कि महात्माजी सोना बनाना बिलकुल नहीं जानते बाजार से सोना मँगा कर उसे ही कढ़ाई में डाल देते हैं और तांबे को सफाई के साथ निकाल लेते हैं। हम लोग ऐश आराम पाने के लिए नव आगन्तुकों की प्रशंसा करके, एवं कल्पित घटनाएं बता कर प्रभावित किया करते हैं। नये आदमी वर्षों वर्ष सेवा टहल करते और धन लुटाते हैं। परन्तु उन्हें बताया कुछ नहीं जाता। मंत्र सिद्धि, बूटी की तलाश, आदि बहाने करके उन्हें लटकाये रखा जाता है, गुप्त बातें, अधिक लाभ की बातें, कानों कान खूब फैलती हैं, इसलिए जहां पुराने भक्त हटते हैं वहां नये भक्त आते हैं। इस प्रकार यह ढर्रा चलता रहता है, महात्माजी को प्रतिष्ठा, पूजा, यश और ऐश्वर्य मिलता है उनके सहारे हम लोग चैन की छानते और मस्त रहते हैं, यही सोना बनाने का रहस्य है।

यह [illegible] चित्ताकर्षक गवाही थी इसके बाद और कुछ समझ लेने की आवश्यकता न थी। उस प्रधान शिष्य को साथ लेकर सोना बनाने वाले महात्मा को नमस्कार करके मैं चल दिया। वहाँ समस्त उपस्थित लोगों में भंडाफोड़ भी किया पर अन्ध श्रद्धा के तूफान में हमारा विरोध तिनके की तरह उड़ गया। किसी ने मेरी बात पर विश्वास न किया। उलटा नास्तिक करार दिया गया। उस प्रधान शिष्य का उसकी इच्छानुसार विवाह कराके और उसे एक कलाकौशल धंधे में लगा कर [illegible] दिया।

(२) त्रिकालदर्शी शाक्त।

भरतपुर रियासत के एक गांव में देवी के मठ पर एक तांत्रिक महोदय रहते थे, जिनके बारे में दूर-दूर तक यह प्रसिद्ध था कि उन्होंने देवी को सिद्ध कर कर लिया है। भगवती दुर्गा उन पर प्रसन्न है और उन्हें त्रिकालदर्शी होने का वरदान दिया है। जो आदमी उनके पास जाता है उसके मन की बात जान लेते हैं और जो बात पूछने की इच्छा से कोई मनुष्य उनके पास जाता है उसे बिना कुछ पूछे ही सब बातें बता देते हैं। इन शाक्त सिद्ध की कीर्ति दूर दूर तक फैल रही थी। उनके पास दसियों आदमी रोज जाते थे और अपने बारे में बिना बताये अनेक गुप्त बातें सुनकर पूर्ण प्रभावित- होकर उनके सच्चे भक्त होकर लौटते थे।

अपनी भी इच्छा उनके दर्शनों की हुई। आवश्यक सामान साथ लेकर चल दिया। रेलवे स्टेशन से कोई चार कोस दूर वह देवी का मठ है। रास्ता बड़ा ऊबड़ खाबड़, जंगली और पथरीला है। इस रास्ते में सिंह तो नहीं पर भेड़िये और बाघ प्रायः मिलते हैं। इसलिए अकेला आदमी प्रायः ठिठकता है और यह देखता है कि कोई साथी उधर जाने वाला मिले तो चलें। कारण कि लुटेरों का, हिंसक पशुओं का, तथा छोटी पगडंडियों के बीच रास्ता भूल जाने का भय बना रहता है। मैं स्टेशन के बाहर साथी की प्रतीक्षा में बैठा हुआ, इधर उधर देख रहा था कि एक सज्जन कंधे पर मोटी लाठी रखे, बगल में एक गठरी दबाये पास में आ खड़े हुए। मुझे बैठा देख कर ठिठक गये। और गठरी में से चिलम निकाल कर तमाखू पीने की व्यवस्था करने लगे। चिलम सिलगा कर मेरी ओर बढ़ाते हुए उन्होंने मुझे

भी पीने के लिए पूछा, मैंने विनय पूर्वक क्षमा मांगते हुए कहा कि मैं तमाखू नहीं पीता, मेरे मना करने पर वह मेरे समीप बैठ कर खूब धूम्र पान करने लगे।

इसी बात चीत का सिलसिला शुरू हुआ। एक दूसरे का परिचय पूछा गया। मालूम हुआ कि वह व्यक्ति धौलपुर रियासत का रहने वाला राजपूत है [illegible] स्कूल तक पढ़ा है, घर में कुछ जेवर चोरी चले गए हैं उनका पता पूछने [illegible] के पास जा रहे हैं। यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई कि साथ मिल गया। वह पहले भी देवी के मठ पर कई बार जा चुके हैं, रास्ता उनका भली भांति देखा हुआ है यह जान कर और [illegible] भी तसल्ली हुई। हम दोनों साथ २ चल दिये।

वह आदमी था तो देहाती, पर बात चीत में बड़ा निपुण था। मीठी ज़बान, कहावतों से भरी हुई बोल चाल, बरबस लोगों का मन अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी। हम दोनों साथ साथ चले जाते थे, वह आप बीती अनेकों सुनाता जाता था, उसकी बोली सुनते हुए दिल पर उसका असर होता था, बातें करते करते उलझनों, बातें करते एक डेढ़ घंटे [illegible] इतनी देर में हम प्रायः दो ढाई कोस चल चुके थे। दोपहर हो चला, गर्मी के दिन थे, छायादार पीपल के पेड़ के नीचे कुआं था, उसने गठरी में से लोटा और डोरी निकाल कर पानी भरा, हम दोनों पानी पीकर पेड़ की शीतल छाया में सुस्ताने के लिए थोड़ी देर बैठ गये।

यद्यपि हमारे साथी ने बात चीत का क्रम बदला, उसने अपनी बातों के बजाय हमारी बातें पूछनी आरंभ की। वह बुद्धिमानी, चालाकी और उत्सुकता के साथ ऐसी मुद्रा के साथ मेरा परिचय एवं आने का कारण पूछने लगा। न

बताना शिष्टाचार के नाते ठीक न था। सही बताना मैं चाहता न था क्योंकि मेरा परिचय और आने का कारण दोनों ही बड़े विचित्र थे। उसे समझने में से काफी कठिनाई पड़ती और मुझे बहुत माथा पच्ची करनी पड़ती। पीछा छुडाने के के लिए मैंने यों ही अंट संट बातें बताईं। कहा मैं—अलीगढ का रहने वाला गौड ब्राह्मण हूं नाम मेरा रामचन्द्र है। एक मुकदमा लग गया है उसकी बात पूछने आया हूं। मुकदमे की बारीकियों के बारे में उसने अनेक प्रश्न पूछे—किस विषय का मुकदमा है, किस अदालत में है मुद्दाअलह कौन है, आपका वकील कौन है, गवाह कौन कौन हो चुके हैं, आदि इसी प्रकार मेरे व्यक्तिगत पारिवारिक, व्यवसायिक जानकारी के संबंध में अनेकों बातें पूछीं। मैं मन ही मन अकारण की जिरह से खीज रहा था पर शिष्टाचार के कारण उसे उलटे सीधे उत्तर देता चलता था। उस प्रकार चलते-चलते हम लोग दोपहर ढले तक मठ पर जा पहुंचे।

मठ की बगल में एक बड़ा सा पक्का दालान बन रहा था, सामने चबूतरा था, चबूतरे पर पीपल का छायादार पेड-पेड से थोडा हट कर कुआ था। जङ्गल में यह स्थान बहुत भला मालूम पडता था। उस दालान में हम लोग ठहर गये। पूछने पर पता चला कि शाक्त महोदय दिन रात मठ में साधना रत रहते हैं और प्रातःकाल निकलते हैं उसी समय आगन्तुकों से भेंट करते हैं। रात हमें उस दालान में रह कर काटनी थी। उसमें हमारे जैसे और भी आठ दस आदमी ठहरे हुए थे। पूछने पर मालूम हुआ कि सभी, अलग अलग स्थानों के हैं और अपनी किसी कठिनाई में इन सिद्ध पुरुष की सहायता लेने आये हैं। इतना जान

थैले के साथ में पीपल की छाया में चबूतरे पर दरी बिछा कर लेट गया।

जो व्यक्ति उस दालान में ठहरे हुए थे उनमें आपसी बातें हो रही थीं, सब लोग आपस में अपनी अपनी दुःख गाथायें कह रहे थे। मैं सोना चाहता था पर उन ठहरे हुए लोगों की कौतूहल पूर्ण गाथाओं को सुनने में ऐसा मन लगा कि नींद न आ सकी। इन सुनने में रस आता था पर एक बात बहुत बुरी लगती थी उनमें से दो तीन आदमी बाकी लोगों की बातें पूछने के लिए बेतरह पीछे पड़े हुए थे। पूछने योग्य और न पूछने योग्य सभी बात पूछ रहे थे। अपरि-चित या नवीन परिचय के व्यक्ति से जो पूछताछ की जाती है उसकी एक मर्यादा होती है, अत्यन्त निजी बातों को, कुछ घंटे के परिचय मात्र के आधार पर, पूछना सभ्य समाज में अशिष्टता समझी जाती है पर वह लोग उस अशिष्टता की परवाह न करके ऐसे चिपटे हुए थे मानों उनके पेट में से हर एक बात पूछने पर तुले हुए हों।

सन्ध्या होते होते मैं उठा, शौच स्नान से निवृत्त हुआ। थैले में से भोजन निकाला और कूप के मुंडेर पर बैठ कर खाया। और वहीं चबूतरे पर जा बैठा, रात काटनी थी. शाम सवेरे से रात को मिलने की संभावना थी ही नहीं। जो मुझे पहले आ गये थे, उन पूछने वालों में से एक ने मुझे भी ब्यौरा और निजी बातों की पूछताछ करने लगा। मन ही मन मुझे झुंझलाहट आई कि यह लोग ऐसी अनाधिकार चेष्टा क्यों करते हैं। एक बार मन में आया कि इन्हें फटकार दूं। पर दूसरे ही क्षण एक दूसरा विचार पैदा हुआ—यहाँ जंगल का मामला है, रात इनके साथ बितानी

है, झगड़ा करने मे कोई विपत्ति आ सकती है, अपना कोई सहायक नहीं। इसलिए इन्हें नाराज करना ठीक नहीं। इसलिए मैं इनके प्रश्नों के गलत सलत उत्तर देकर पीछा छुडाने का प्रयत्न करता रहा। अधिक देर हो जाने पर नींद आने का बहाना करके मैं लेट गया। कुछ देर आंख बन्द किये पड़े रहने पर नींद आई, और जब आंख खुली तो सवेरा था।

साथी लोग मुझसे बहुत पहले उठकर नित्य कर्म से निवृत्त हो चुके थे। मैं भी जल्दी जल्दी सब काम से निवृत्त हुआ। सूर्योदय होते ही शाक्त महोदय देवी के मठ में से निकले स्थूल शरीर, माथे पर त्रिपुण्ड, लाल रेशमी धोती, चढ़े हुए गोल, चढ़ी हुई आंखें, देखने में डरावनी सूरत लगती थी। बड़ा सा बिछौना बिछा दिया गया सब लोग बैठ गये, उन सिद्ध पुरुष के लिए चौकी बिछादी गई, वे उस पर विराजमान होगये। कुछ देर तक सब लोग चुपचाप बैठे रहे। सन्नाटे को चीरते हुए उन शाक्त महोदय ने हम लोगों में से एक का नाम लेकर पुकारा। वह हाथ बांध कर खड़ा हो गया। अब उस खड़े हुए व्यक्ति का सारा इतिहास वे शाक्त महोदय बताने लगे। ऊपर पीपल के पेड़ की ओर उनकी दृष्टि थी, भाव भंगी ऐसी बनाते जाते थे मानो पेड़ के ऊपर कोई देवता बैठा हो और वह उनसे कुछ कह रहा हो। और मानो जो बात देवता से सुनते हो वही बातें वे कह रहे हों। कभी कभी अपनी भूल का बहाना करके देवता से फिर उस बात को पूछते और अपनी गलती को दुरुस्त करते। इस प्रकार जो व्यक्ति पुकारा गया था उसका नाम, गांव, घर की बनावट, पारिवारिक परिचय, अन्य गुप्त प्रकट बातें, घर से यहां तक आने का वृत्तान्त, यहां आने का प्रयोजन आदि

अनेकों बातें चमत्कार उन्होंने बताईं और जिस काम के लिये आया था, उसके सम्बन्ध में भविष्य वाणी की। जो बातें बताईं गई थी, वे शत प्रतिशत ठीक थीं, बेचारा वह व्यक्ति श्रद्धा से नत मस्तक होगया। ऐसा त्रिकालदर्शी सिद्ध उनकी दृष्टि में ईश्वर की बराबर था। जो कुछ भेंट पूजा लाया था उससे अधिक उसने सिद्ध महोदय के सामने रख दिया। अब दूसरों का नम्बर आया। जिसका नाम पुकारा जाता वह खड़ा होता। पीपल पर बैठे हुए अदृश्य देवता से वे बातें करने लगते और खड़े हुए व्यक्ति का नाम, धाम, पता, परिचय, अनेक गुप्त प्रकट बातें, आने का उद्देश्य बताते थे तथा आगन्तुक की मनोवांछा के सम्बन्ध में भविष्य वाणी करते या कठिनाई का उपाय बताते। वह व्यक्ति श्रद्धा से नत होकर भेंट चढ़ाता और उठ कर चला जाता। सभी लोगों के सम्बन्ध में शत प्रतिशत बातें सच बताई जारही थीं। जिससे श्रद्धा और विश्वास के सुदृढ़ भाव सबके मन में जमते थे। मैं अनेक बार ठगा गया था, अनेकों की धूर्तता [illegible] था, पर [illegible] दर्शकों के [illegible] शब्द मुख से [illegible] सारी बातें [illegible] का [illegible] मेरे मन में भी श्रद्धा जागने लगी।

मैं [illegible] बैठा था, मेरा नाम [illegible] मन में [illegible] था। जब [illegible] तो [illegible] —"[illegible]चन्द।" मैंने इधर उधर दृष्टि [illegible] पर [illegible] कोई [illegible] था, मैं अकेला ही था [illegible] और [illegible] हो. मैं [illegible] सामने नहीं जाते। मैं [illegible] कर [illegible] और लोगों की भांति हाथ बांध कर खड़ा हो

गया। देवता से पूछना और मुझे मेरे संबंध की बातें बताने का क्रम चलने लगा। पर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब देखा कि मेरे संबंध में एक भी बात ठीक नहीं बताई जा रही है। सबकी सब गलत है। हैरानी से मेरे माथे पर पसीने की बूंदें आगई। जब सब लोगों की सब बातें ठीक बताई जा चुकी हैं तो मेरे संबंध में यह बिलकुल उलटा क्यों हो रहा है। इस हैरानी को चीर कर एक बात याद आई। रेलवे स्टेशन से साथ आने वाले आदमी को तथा रात भर चबूतरे पर पूछताछ करने वाले सज्जन को जो बातें मैंने बिलकुल गलत बताई थीं वे ही बातें सिद्ध महोदय ज्यों की त्यों दुहरा रहे हैं। मैंने अपना गलत नाम "रामचंद्र" स्टेशन से साथ आने वाले साथी को बताया था। अब मैं समझा कि शाक्त महोदय के त्रिकालदर्शी होने का क्या रहस्य है। उनके गुर्गे आगन्तुकों के पीछे लग जाते हैं और उससे भेद पूछ कर शाक्त को चुपचाप बता देते हैं और दूसरे दिन वह उन्हीं को ग्रामोफोन के रिकार्ड की तरह दुहरा देता है।

मेरे संबंध में सभी बातें बिलकुल गलत बताई जारही थी, इनके कारण जो हैरानी थी उसका समाधान हो जाने पर मेरे होंठों पर मुस्कराहट की एक हलकी लहर दौड़ गई। मुझे प्रसन्न देख कर शाक्त भी अकचका रहा था अन प्रसन्न मुद्रा देख कर उसे सतोष हुआ। अन्त में उसने पूछा—'काठ की तरह क्यों खड़े हो, मैंने जो बताया है वह ठीक है या नहीं'। मैं बिना कुछ उत्तर दिये बैठ गया। उसने फिर पूछा—बोलते क्यों नहीं। मैंने नया बहाना बनाया। हाथ पैरों को कंपाते हुए कहा—महाराज मुझे "गुंग बाय" का रोग है कभी कभी मेरा मस्तिष्क बिलकुल बेकाम हो जाता है, जब बीमारी का

डौरा होता है तो कानों में सनन सनन होने लगती है। मुझे आज बीमारी का दौरा होगया। आपने जो नाम पुकारा तो उसे भी न सुन सका और जो कुछ आपने कहा है वह भी कुछ समझ में न पड़ा। अब कृपा कर एक दिन ठहरने का अवसर और दे दीजिए। बहुत दूर से आया हूं। कल आपकी कृपा से लाभ अवश्य उठाऊंगा। अपने इतनी देर के परिश्रम को बिना लाभ का जाते देख कर ग्राहक असन्तुष्ट हुआ, मुझे नाराजी और तिरस्कार की दृष्टि से देखा पर मेरी विनय का ध्यान में रख कर दूसरे दिन ठहरने की इजाज़त और देदी। वैसे आमतौर से यहां किसी को एक दिन से अधिक ठहरने नहीं दिया जाता था।

दूसरे दिन ठहरने का उद्देश्य यह था कि अपने संदेह का भली भांति जांच कर सकूं। उस दिन भी पिछले दिन की भांति दस बारह नये आदमी आये। कल जो आदमी थे उनमें से सात तो चले गये थे पर तीन वहीं जमे हुए थे, वे तीन ही ठग [illegible] पास बैठ कर पूछ रहे थे। जो आदमी कल स्टेशन से ले साथ आया था। वही आज भी स्टेशन से दो व्यक्तियों को साथ लाया। इस से जान गया कि यह चार पांच ठग का जाल है। तीनों ने वहीं पूछ कर आज को बनाने वालों [illegible] दोनों को अपनी लिखाई बताते हुए सुना [illegible]।

आज [illegible] बातें में उसने मैं एक किसी प्राह- [illegible] था। उसे अलग बुला कर मैंने [illegible] पास पर [illegible] कर लिया कि [illegible] बनादेगा। उसने [illegible] दिया। दूसरे [illegible] उन लोगों की बातें [illegible]

ठीक ठीक बतादी गई पर अध्यापक के सम्बन्ध में कही गई सब बातें बिलकुल गलत थी। मेरा नम्बर आया तो कल वाली बातें ही फिर बताई गई जो सर्वथा असत्य थी।

त्रिकालदर्शी शास्त्र के मायाचार का भंडाफोड़ करता हुआ मैं वहां से उलटे पॉवों वापिस चला आया।

(४) ऐसा योगी जिसके पेशाब में दिये जलते थे।

सिन्ध प्रान्त में शिकारपुर के पास एक ऐसे योगी की चर्चा सुनी जिसके पेशाब में दिये जलते थे। हिन्दी भाषा में "पेशाब में दिये जलना" एक कहावत है जिसका प्रयोग तेजस्विता प्रदर्शन के लिए होता है। जैसे किसी आदमी का आतंक चारों ओर छाया हुआ हो, उसका आदेश मानने के लिए बड़े बड़ों विवश को होना पड़ता हो तो उस आदमी के लिए कहा जायगा कि 'उसके पेशाब में दिये जलते हैं।" इस कहावत को चरितार्थ करके अपनी तेजस्विता और योग साधना की सफलता प्रकट करने के लिए वे योगी जी पेशाब में दिये जलाते थे। उनके शिष्यों का कहना था कि वे दिन भर में केवल एक बार पेशाब करते हैं और जब करते हैं तब वह घी ही निकलता है। उनके पेशाब करने का समय शाम को ५ बजे था, उस समय सैकड़ों दर्शक इस आश्चर्य को अपनी आंखों से देखने के लिए एकत्रित होते थे।

कराची में मुझे यह पता लगा था मैं वहां से शिकारपुर के लिए चल दिया, वहां, से ढूंढते २ उन योगिराज के पास जा पहुंचा। शाम को चार बजे पहुंचा था, एक

घंटे बाद ही पेशाब करने की वेला आगई। अपने कमरे में से महात्मा जी निकले. उनके आते ही कीर्तन आरंभ होगया। और तुरन्त ही पेशाब करने की तैयारियाँ होने लगीं। जिधर को मुंह किये बैठे थे उधर को योगीजी ने पीठ करली। दर्शकों में से जिसे आज्ञा प्राप्त हो चुकी थी, वह एक चांदी का कटोरा हाथ लेकर महात्मा जी के सामने पहुंचा। और कटोरे को आगे कर दिया, योगी जी उस कटोरे में पेशाब करने लगे, जब कर चुके तो वह कटोरा दर्शकों के सामने लाया गया। देखने में वह पिघले हुए शुद्ध घी की तरह था। जाड़े के दिन थे थोड़ी देर में ठंडी हवा लगते ही वह जमने लगा। अब योगिराज के सिंहासन के पास जो दस बड़े बड़े पीतल के दीपक, दीवटों पर सजाये हुए रखे थे उनमें वह घी डाला गया और बत्तियां डाल कर दीपक जला दिये। सब लोग जय जयकार कर उठे। शंख, घड़ियाल मुरली, नगाड़े आदि बजने लगे। कटोरे में बचा हुआ घी प्रसाद की तरह उंगली की नोक पर लिया, देखा, सूँघा, परीक्षा करके सराहना की, और आंखों मे लगाया। जितने भी दर्शक थे सबको पूरा पक्का विश्वास हो गया कि योगिराज पहुंचे हुए हैं, उनकी आत्मा दिव्य है, शरीर दिव्य है और मल-मूत्र तक दिव्य हैं। इस दिव्यता के कारण उन्हें जनता का धन और सम्मान प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता था।

अनेकों प्रपंचों में से पार निकलने के कारण मेरा मन बहुत संशयाकुल था कि कटोरे में या तो कोई पर्दा होगा या पेशाब को किसी प्रकार पलट कर घी डाल दिया जाता होगा पर जब आंखों से देखा तो जाना कि यहां ऐसी कोई गुंजाइश नहीं। क्योंकि योगी जी नंगे बदन रहते थे, कमर में एक

छोटासा कपड़े का टुकड़ा था, भरी सभा में पीठ फेर कर उनने पेशाब किया था, चांदी का कटोरा सैकड़ो हाथों में होकर गुजरा था, कहीं किसी बात में कोई रहस्य मालूम न पड़ता। यह सचमुच आश्चर्य जनक बात थी, मनुष्य का मूत्र विशुद्ध घृत जैसा हो यह वास्तव में बड़े अचम्भे की चीज थी।

पूर्ण सत्यता को जानने के लिए मैंने वहां अड्डा डाल डाल कर रहने का निश्चय किया। दर्शकों के चले जाने बाद मैं योगिराज से मिला। योग मार्ग में मेरी रुचि, ऊंची विद्या, आकर्षक व्यक्तित्व, मृदुल स्वभाव इन सब बातों ने उनके ऊपर काफी प्रभाव डाला। ऐसे व्यक्तियों को अपने पास रखने में, उन्हें शिष्य बना लेने में साधु लोग अपना बड़ा लाभ देखते हैं, उनकी इस कमजोरी को मैं भली भांति जानता था इसलिए अपना परिचय और भावी कार्यक्रम उन्हें इस प्रकार बताया गया जिससे उनकी कृपा सहज ही मुझे प्राप्त हो गई। जिस कमरे में महात्माजी रहते थे उसके पीछे वाले कमरे में मुझे रहने को जगह दे दी। मैं उसमें सुख पूर्वक रहने लगा।

सत्यता की जांच किस प्रकार हो, ऐसे उपाय मैं खोजने लगा। जहां पेशाब किया जाता था वहां कोई चाल-बाजी न होती थी यह मैंने दो रोज में सब प्रकार जांच लिया। एक दिन हाथ में कटोरा लेकर मैंने स्वयं पेशाब कराया मूत्रेन्द्रिय से घी निकलते मैंने खुद अपनी आंखों देखा थी। यदि कोई गड़बड़ होती होगी तो वह उनके रहने के कमरे में ही की जाती होगी ऐसा विचार करके मैं ऐसा उपाय सोचने लगा जिसे उनके ऊपर निगरानी रखी जा सके। हर वक्त ख्याल रहता था, बिना आज्ञा के किसी

को उनके पास जाने की आज्ञा न थी कमरे में कोई अन्य दरवाजा या खिड़की न थी, अब किस प्रकार सफलता मिले इस ढूंढ खोज में मैंने योगी जी के कमरे के चारों ओर बड़े ध्यान पूर्वक कई चक्कर लगाये कि कोई मार्ग ऐसा मिले जिसमें होकर कमरे के भीतर की बातें दिखाई दे सकें, पर ऐसा कोई छिद्र दिखाई न पड़ा। अब मैं अपने कमरे की छत पर चढ़ा और दूसरे कमरे के लिए कोई छिद्र ढूंढने लगा। सौभाग्य वश छत से कुछ नीचे एक छोटा रोशनदान मिला। जहां होकर उसमें से योगी जी वाले कमरे का आधा भाग देखा जा सकता था। इस छिद्र में आंख लगा कर पेशाब करने के दो घंटे पूर्व खड़ा हो गया और देखने लगा कि योगी जी कोई विशेष क्रिया तो नहीं करते हैं।

जब पांच बजने में पन्द्रह मिनट बाकी रहे तो उन्होंने बोतल में रखी हुई एक पतली चीज निकाली उसे कटोरी में उंडेला और मूत्रेन्द्रिय को उसमें डुबा दिया। उन्होंने चार पांच लम्बे लम्बे श्वांस खींचे और कटोरी खाली हो गई। कटोरी को एक ओर रखकर उन्होंने मूत्रेन्द्रिय को कुछ ऐंठ कर गांठ सी बनाई और ऊपर से लंगोट कस कर बांध लिया। इस क्रिया को करने के बाद वे स्त्रियों के समक्ष चले गये। मैं भी चुपचाप छत पर से उतर कर उसी मस्त मण्डली में एक ओर जा बैठा, नित्य का काम यथावत् चलने लगा।

अब इस मूत्रेन्द्रिय की शक्ति का सारा रहस्य मेरी समझ में आ गया। हठ योगी सम्प्रदाय के लोग वज्रोली क्रिया करते हैं, मूत्र नाली से जल ऊपर खींचना और फिर उसे निकाल देना वज्रोली क्रिया कहलाती है। यह कुछ भी

कठिन नहीं है। हठ योग के अनेकों साधकों को हमने यह साधन करते देखा था, थोड़े ही दिनों के प्रयत्न से अभ्यास होजाता है। इसी क्रिया का अभ्यास इन योगीजी ने कर रखा था। वे पानी की जगह पर मूत्रेन्द्रिय से घी चढ़ा लेते थे, इन्द्रिय को ऐंठ कर गांठ भी बनाते और ऊपर से लगोट कसने का प्रयोजन यह था कि चढाया हुआ घी फैलने न पावे। पेशाब से निवृत्त होकर घी चढाया जाता है जिससे कि कहीं घी और पेशाब मिल न जाय।

रहस्य मालूम हो चुका था तो भी उसकी एक बार पुष्टि करने की और आवश्यकता थी। दूसरे दिन जब वे योगीजी पांच बजे जनता के सामने आये तो मैं अवसर पाकर उनके कमरे में चुपके से घुस गया और उस घी भरी बोतल को अलमारी में से निकाल लाया, अलमारी ज्यों की त्यों बन्द करदी। दूसरे दिन नियत समय पर जब कि महात्मा जी के आने की तैयारी हो रही थी, अचानक सन्देश आया कि योगीजी समाधि मग्न होगये हैं वे आज दर्शन देने न आवेंगे। मैं समझ गया कि यह समाधि और कुछ नहीं घी की बोतल ठीक समय पर न मिलने और उसकी दूसरी व्यवस्था तुरन्त ही न हो सकने की समाधि है।

जानकारी पूरी होगई। दूसरे दिन खिन्न चित्त,उदास्य सहन लेकर वहां से चल दिया।

(५) मूक प्रश्न बताने वाले ज्योतिषी ।

मुख से बिना कहे पूछे जाने वाले प्रश्नों को मूक प्रश्न कहते हैं । अनेकों ज्योतिषी मूक प्रश्न बताते हैं हमें ऐसे ज्योतिषियों से कितनी ही बार काम पड़ा है । इनके भेदों को जानने में भी हमें असाधारण परिश्रम तथा काफी समय लगाना पड़ा है ।

एक बार आगरा में एक ज्योतिषीजी आये बेलन-गंज की धर्मशाला में ठहरे, शहर भर में मुनादी तथा इश्तहारों द्वारा विज्ञापन कराई गई कि ज्योतिषीजी मूक प्रश्नों का उत्तर देते हैं हम भी पहुंचे । उनका तरीका यह था कि जो आदमी उनके पास जाय वह एक कागज पर अपना प्रश्न लिख कर अपने पास चुपचाप रखले, ज्योतिषीजी उस प्रश्न को भी बताते थे और उसका उत्तर भी देते थे । फीस हर प्रश्न की फीस २) थी । सबेरे से शाम तक पचास साठ पूछने वाले इनके पास पहुंचते थे । आसानी से सौ रुपये रोज की आमदनी हो जाती थी । प्रश्नों को प्रायः ठीक ही बता दिया जाता था ।

बारीकी से देखने पर मालूम हुआ कि इस विद्या का रहस्य उस कापी में था जो वहां आमतौर से खुली हुई पड़ी रहती थी पाठक उसी के कागजों पर अपने प्रश्न लिखते थे और कागज फाड़ कर अपनी जेब में रख लेते थे । इस कापी में जो कोरे कागज थे वे चतुरता पूर्वक रासायनिक ढंग से बनाये गये थे । कागजों पर पीठ पर बढ़िया साबुन घिस दिया गया था । पेन्सिल से लिखने पर कार्बन पेपर के ढंग की भांति कागजों की पीठ पर लिखा हुआ

साबुन नीचे वाले कागज पर लग जाता था। कार्बन के लिखे हुए अक्षर नीले रंग के कारण साफ दिखाई पड़ते हैं पर साबुन के अक्षर सफेद और हलके होने के कारण दीखते नहीं पर उन्हें विशेष उपाय से पढ़ा जा सकता है। उस नकल आये हुए कागज पर राख, गुलाल, रामरज, गेरु का चूर्ण या कोई अन्य ऐसी ही बारीक पिसी हुई रंगीन चीज डाली जाय तो साबुन के स्थान पर वह चीज चिपक जाती है और अक्षर स्पष्ट रूप से पढ़े जा सकते हैं। या उस कागज को पानी में डुबो दिया जाय तो वे साबुन के अक्षर दिखाई दे सकते हैं। यही उन ज्योतिषीजी की विद्या थी इसी के बल पर वे कमाते खाते थे। थोड़े से परीक्षण से ही उनके इस रहस्य को मैंने जांच लिया।

एक ऐसे ही ज्योतिषी से जबलपुर में भेंट हुई। उनका रहस्य यह था कि सादा कागज के टुकड़े काट कर रख देते थे, पेन्सिलें पड़ी रहती थी। कागज पर पेन्सिल से लिखते समय कोई कड़ी चीज नीचे रखने की आवश्यकता पड़ती है, इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये वहां कितनी ही मोटी मोटी जिल्ददार किताबें पड़ी थीं। जिल्दों के पुट्ठे के ऊपर एक हलका कागज चढ़ाया हुआ था। उस कागज और पुट्ठे के बीच में कार्बन पेपर तथा सफेद कागज लगा रहता था। इस पुट्ठेदार किताब के ऊपर कागज रख कर जो कुछ लिखा जाता था उसकी नकल बीच के सफेद कागज पर कार्बन पेपर द्वारा हो जाती थी। ज्योतिषीजी का सेवक उन पुस्तकों को वहां से ले जाता था और नकल वाला कागज निकाल कर पुस्तकों को वहीं रख जाता था, इस नकल को देखकर ज्योतिषीजी मूक प्रश्न बताते थे।

एक ज्योतिषी ने अपना अलग ही नया तरीका निकाला था, उससे बम्बई में भेंट हुई। प्रश्नकर्ता उसके सामने जाकर कुर्सी पर बैठता था, वह अपनी मेज़ के दराज में से एक स्लेट और पेन्सिल निकालता था, प्रश्न कर्ता की ओर देख २ कर वह जल्दी २ सिलेट पर कुछ लिखता था और पूरी सिलेट लिख जाने पर उसे दराज फिर रख देता था अब प्रश्नकर्ता से बात चीत होती—आप कहां से पधारे हैं ? क्या काम है ? आदि सारी बातें पूछते, जब वार्तालाप पूरा हो चुकता तो मेज के दराज में से सिलेट निकाल कर प्रश्नकर्ता के हाथ में देते और पढ़ने को कहते। इस स्लेट में वही सब बातें लिखी होतीं जो प्रश्नकर्ता ने बताई थीं। ज्योतिषी कहता आपके आने से बिना आपसे एक शब्द पूछे सारी बातें जानती थी और इस स्लेट पर लिख कर रखदी थी। प्रश्नकर्ता बेचारा आश्चर्य में पड़ जाता और ज्योतिषीजी की विद्या से प्रभावित होकर उन्हें शक्ति भर भेंट दक्षिणा देता।

पता चलाने पर ज्ञात हुआ कि ज्योतिषीजी की बड़ी मेज के दोनों ओर अर्थात सब जाने वाले बड़े २ दराज थे, उसमें नीचे एक आदमी बैठा रहता था। ज्योतिषी आरंभ में जो कुछ लिखते वह व्यर्थ कलम घिसाघिस थी। वैसी ही दूसरी स्लेट लिए एक आदमी दराज में बैठा रहता था और जो वार्तालाप दोनों में होता था उसे सुनकर तुरन्त की बात लिखता जाता था। वही स्लेट की जगह में प्रश्नकर्ता को दिखाई जाती, वह बेचारा समझता कि मेरी बातों से पूर्व ही यह स्लेट लिखी गई थी।

इस प्रकार के एक नहीं अनेकों ज्योतिषी, तेजी मन्दी बताने वाले, भविष्यवक्ता देखे उनमें से मुझे किसी के पास भी कोई चीज न मिली। यों तो अटकल से दस बातें कही जांय तो उनमें से पांच छै ठीक निकलती ही हैं। इन ठीक निकली बातों को लेकर ज्योतिषी लोग अपनी विद्या का ढिंढोरा पीटते हैं और जो बातें गलत निकली थीं उनको दबा देते हैं।

(६) भूतों के ऐजेन्ट।

भूतों के ऐजेन्ट गांव गांव मिल जाते हैं। जिन्हें सियाने ओझा, भोपा, आदि कहते हैं। यह लोग भूतों का अस्तित्व सिद्ध करने, उन्हें बुलाने, भागने तथा उनके द्वारा कई प्रकार के कार्य कराने के करिश्मे दिखाते हैं। छोटे बालकों के दस्त, बुखार अधिक रोना, हाथ पांव मरोड़ना, आंख न खोलना, उलटी सरीखे रोग भूत चुड़ैलों के आक्रमण समझे जाते हैं। अशिक्षित तथा अन्ध विश्वासी लोगों में ओझाओं द्वारा झाड़ फूंक करना ही इसका उपाय समझा जाता है। स्त्रियों का विशेष रूप से भूतों पर विश्वास होता है। उनके बहुत से रोग भूत बाधा माने जाते हैं, मृगी, बन्ध्यापन, गर्भपात, बच्चों का मर जाना, दूध न उतरना, दुस्वप्न, मूर्छा, आदि रोगों को भूत चुड़ैल का कारण समझा जाता है। आवेश-युक्त अन्य रोग भी इसी श्रेणी में गिने जाते हैं उन्माद, आवेश, भयातुरता, तीव्रज्वर, प्रलाप, तीव्र शूल आदि रोग चाहे वे पुरुष को हों चाहे स्त्री को भूतों के उपद्रव समझे जाते हैं। कंठमाला, विषबेल सरीखे फोड़े, सर्प का काटना यह भी प्रेतात्माओं से सम्बन्धित समझा

जाता है। सूने घर में चूहों द्वारा मचाई हुई खड़बड़ बिल्ली बन्दर आदि का कूदना कभी कभी भूत बन जाते हैं। किसी मृत जानवर या मनुष्य की हड्डियों का फास्फोरस कभी कभी वायु के स्पर्श से अचानक जल उठता है, केंचुए की मिट्टी का फास्फोरस जमीन पर प्रकाशवान हो उठता है। चिड़ियां खाने के लिए केंचुओं को घोंसले में रख लेती हैं। वहां भी फास्फोरस चमकने लगता है। इस प्रकार के प्रमाण भूतों की करतूतों का प्रत्यक्ष प्रमाण बताया जाता है।

ऐसा ही कोई कारण उपस्थित होने पर इन सयाने लोगों का आह्वान किया जाता है। वे अपनी अलौकिकता को सिद्ध करने के लिए नींबू को चाकू से काट कर रस की जगह खून निकालना लोटे में चावल भरना और उस सहित लोटे को चाकू की नोंक से चिपका कर ऊपर उठा लेना, कच्चे सूत के धागे पर तेल का भरा हुआ जलता दीपक लटकाना, ऊपर से उलटे मुंह की मटकी रख देना और फिर थाली का पानी खिंच कर ऊपर मटकी में चढ़ जाना लोटे में पानी भर कर एक कपड़े से मुंह बांध कर लोटे को उलटा लटका देना कपड़े में से छन कर जरा भी पानी न फैलना आदि अनेक प्रकार के चमत्कार दिखा कर अपनी अलौकिकता सिद्ध करते हैं, परन्तु वस्तुतः उनमें कोई चमत्कार नहीं होता, वह सब साइन्स, रसायन या चतुरता के ऊपर निर्भर होती है। देखने वाले उससे प्रभावित होते हैं और सयाने की योग्यता पर विश्वास करके उसकी भेंट पूजा और उसकी इच्छानुसार कार्य करने के लिये प्रस्तुत हो जाते हैं।

किसी को भूतोन्माद पड़ने आते हैं। इसका कारण

मनोवैज्ञानिक है। उन्हें बुरी तरह परतंत्र रहना पड़ता है, घर के छोटे पिंजड़े में पर्दे के कठिन बन्धनों से जकड़ी हुई वे रहती हैं, मुद्दतों एक स्थान पर रहते रहते उनका मन ऊब जाता है, पिता के घर की याद आती है मैके जाने को जी मचलता है पर उनकी अपनी इच्छा का कोई मूल्य नहीं, ससुराल का अरुचिकर वातावरण, वहां वालों का दुर्व्यवहार आदि अनेक कारणों से स्त्रियों को मानसिक क्षोभ उत्पन्न होता है, वे भीतर ही भीतर घुटती हैं। मनोविज्ञान शास्त्र की दृष्टि से इस 'घुटन' का उनके ऊपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। दबी हुई अतृप्त इच्छाएं किसी विस्फोट के लिए अवसर ढूंढती हैं अनेकों स्त्रियों को हिस्टेरिया के दौरे आने लगते हैं। जिन परिवारों में भूतवाद पर विश्वास किया जाता है उनकी इस प्रकार की आत्मत्रास से पीड़ित स्त्रियां भूतों के बारे में सोचने लगती हैं और उन्हें भूत दिखाई आने लगते हैं। उनका विश्वास और आत्मत्रास मिल कर एक वास्तविक मानसिक रोग बन जाता है। यह रोग कभी कभी प्राणघातक भी सिद्ध होता है। नवयुवती स्त्रियां जब तक माता नहीं बनतीं तब तक उनको भूतावेश का भय अधिक रहता है, जब उनके बालक हो जाते हैं तो मस्तिष्क की दिशा दूसरी ओर मुड़ जाती है, ऐसी दशा में भूतोन्माद का भय बहुत ही कम रह जाता है।

रोग धीरे धीरे समय पाकर अपने आप अच्छे होने लगते हैं, स्त्रियां सहानुभूति पाकर अपनी ओर लोगों का अधिक ध्यान आकर्षित होने पर पर स्याने के उपचार से प्रभावित होकर अच्छी हो जाती हैं, आवेश उन्माद आदि भी समय पाकर ठीक हो जाते हैं, इसका श्रेय स्याने को

मिलता है, उनकी रोज़ी चलती रहती है। भूतों की अनेकों कथायें कही जाती हैं पर उन कथाओं की कड़ी जांच करने पर मालूम होता है कि उनमें तीन चौथाई से अधिक तो बिलकुल कल्पित, मनघड़त किम्वदन्तियां होती हैं। आश्चर्य एवं कौतूहल उत्पन्न करने के लिए कितने ही लोग कह देते हैं कि ऐसा हमने देखा था, पर असल में उनने देखा नहीं सुना होता है, और उस सुनने के आधार का पता लगाने पर मालूम पड़ता है कि किसी ने यों ही गप्प उड़ा दी है। एक चौथाई से कम घटनायें कुछ सार गर्भित होती हैं, उनके कारण, किसी अन्य वैज्ञानिक तथ्य पर अवलम्बित होते हैं।

भूत उतारने वाले बड़े बड़े प्रसिद्ध सयानों के यहां हम पहुंचे हैं। उनके यहां प्रतिदिन दस बीस ऐसे रोगी पहुंचते और अच्छे होते थे। भूतों का आवेश बुलाना, रोगी पर चढ़े हुए भूत से बातें पूछना। भूत उतारने की क्रिया करना, यही सब व्यापार दिन भर उनके यहां होता था। एक ने तो एक बड़े लट्ठे में कितनी ही जंजीरें बांध रखी थीं उनका कहना था कि इस लट्ठे पर जंजीरों से उनने कितने ही बड़े बड़े भूतों को बांध रखा है। इन भूत उतारने वालों से प्रायः सभी से हमने विनय पूर्वक, सेवा से प्रसन्न करके, लोभ देकर, चुनौती से उत्तेजित करके, यह प्रार्थनाएं की कि वे हमें भूत को दिखादें या हमारे ऊपर भूत बुलादें, पर उनमें से किसी ने भी यह छोटी सी प्रार्थना स्वीकार न की। यदि सचमुच इनने भूतों को वश में कर रखा है तो [illegible] भूत हमारे ऊपर [illegible] [illegible] ऐसा [illegible] क्या [illegible] था ?

ऐसा तो संभव हो सकता है कि जिन लोगों को किसी

कारण वश भूतोन्माद है उन्हें मनोवैज्ञानिक चिकित्सा में उस रीति से भी उपचार किया जा सकता है जिस रीति से कि सयाने लोग करते हैं। परन्तु सयानों में वस्तुतः भूत बुलाने भगाने आदि की योग्यता होती है, यह नहीं कहा जा सकता- सयाने अपने ऊपर जो भूतावेश बुलाते हैं उसके वास्तविक होने में भी पूरा २ सन्देह है। भूतों की सहायता से किसी को बीमार कर देने मार डालने या लड़ाई उत्पन्न कराने की बात असत्य है। सयाने लोग अपनी प्रतिष्ठा एवं लाभ के लिए इस प्रकार के आडम्बर रचा करते हैं। अनेकों सयाने लोगों से मिलकर बातें करने और जांच करने पर हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे है।

एक नई किस्म के सुशिक्षित सयाने कुछ दिनों से और पैदा हुए हैं। इनका तरीका विलायती है। यह तरीका 'स्प्रिचुएलिज्म, कहलाता है। इंग्रेजी में इस विषय पर कितनी ही पुस्तकें हैं। देशी भाषाओं में भी थोड़ी बहुत पुस्तकें इस विषय पर मिल जाती हैं। यह लोग प्रेतों को बुलाते हैं और उनसे वार्तालाप करते है। इस तरीके के अनुसार प्रेत प्राय. लिख कर उत्तर देते हैं। कई आदमी गोलचक्र बांध कर बैठते हैं बीच से एक मेज रख लेते है। अब कई तरीको से प्रेतों से वार्तालाप किये जाते हैं। जैसे (१) ओटो मैटिक राइटिंग-द्वारा इस विधि में मन ही मन ऐसी भावना की जाती है कि हमारे ऊपर भूत आवेश आवे। थोड़ी देर में किसी के ऊपर आवेश आता है। उसको कागज और पेन्सिल देदी जाती है, जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनका वह आवेश मग्न व्यक्ति उत्तर लिखता है, इन उत्तरों को प्रेत का उत्तर समझा जाता है। (२) 'प्लैन्चिट द्वारा-यह लकड़ी

का एक टुकड़ा होता है जिसमें पहिये लगे होते हैं, इसमें एक छेद में पेन्सिल लगाई जाती है। इस प्लैनचिट के नीचे कागज़ रख देते हैं और ऊपर कई व्यक्ति हाथ रखते हैं, थोड़ी देर में पहिया चलता है और पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्लैनचिट में लगी हुई पेन्सिल लिखने लगती है (२) तिपाई लगा—तीन पैर की मेज़ पर कई व्यक्ति हाथ रख कर बैठते हैं, थोड़ी देर में प्रेत के आने पर मेज़ के पाये उठने गिरने लगते हैं और खट खट की संकेत माला बनाली जाती है, और तार घर की ट्रेमी की गट-गट-ध्वनि से जिस प्रकार शब्द बनते हैं वैसे ही मेज़ के पायों की खटखट के संकेतों से मतलब निकालते हैं। इस प्रकार के और भी कई तरीके हैं।

इन तरीकों के बारे में कई सन्देह उत्पन्न होते हैं। ओटोमैटिक राइटिंग—स्वतोलेख के बारे में यह सन्देह उत्पन्न है कि जो विचार पेन्सिल से लिखे जाते हैं, क्या वे उन्हीं व्यक्तियों के मस्तिष्क में छिपे हों या दोनों हाथों में। प्लैनचिट चलाने में या मेज़ के पाये खटखटाने में स्वतः ही पैदा हुआ कोई शक्ति का काम रहता है। इस ओर ध्यान न दिया जाय तो भी हो [illegible] होते हैं वे कमजोर जगह नहीं होंगे। [illegible] हो सकती उनका [illegible] है। कैसे पता चले [illegible]? यहां [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible]

ही मालूम हो, जिन बातों की जानकारी उस आवेश वाले व्यक्ति को किसी प्रकार होने का अन्देशा हो वह प्रश्न न पूछे जाय। कभी कभी कोई भुलावे मे डालने वाले प्रश्न भी पूछे जाय। ऐसे दो चार प्रश्न पूछते ही इन लोगों की कलई खुल जाती है और सारा खयाली महल ढह पडता है।

बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रेतविद्या के ज्ञाता एक बार आगरा पधारे। उनका सार्वजनिक भाषण हुआ। एक प्रोफेसर साहब के यहा वे ठहरे हुए थे। हम कई मित्र उनसे मिलने गये। चक्र किया गया। हमारे साथ जो मित्र वहां मौजूद थे, उन्हीं की प्रेतात्मा बुलाई गई। वह आगई और उत्तर देने लगी। हमारे पिताजी बुलाये और उनसे पूछा गया कि आप जब रामेश्वर यात्रा गये थे तब के कुछ सस्मरण सुनाइए। उन्होंने बहुत सारे सस्मरण सुनाये पर वास्तव में हमारे पिता जी कभी रामेश्वर न गये थे। तीसरे मित्र ने अपनी माताजी बुलाई और छोटी बहिन के लिए कुछ सदेशा मागा। माताजी ने बहुत सी बातें अपनी बेटी के सबंध में में कहीं, पर वास्तव में उनकी कोई बहिन न थी। तीनों ही प्रश्न गलत थे तीनो में से एक के लिए भी प्रेतों ने यह न कहा कि यह प्रश्न गलत है। बल्कि सविस्तार उत्तर दिये। इससे हम लोगों की आस्था उनके परलोक वाद पर से उठ गई। इसी तरीके को काम मे लेकर हमने कितने ही चक्र करने वालों को छकाया। यह बुद्धि का युग है। जब तक किसी बात को ठीक प्रकार प्रमाणित न कर दिया जाय, तब तक उस बात को विज्ञ समाज स्वीकार नहीं कर सकता।

(७) भविष्य वक्ताओं की चतुरता

भविष्य वक्ताओं की अनेक श्रेणियां हैं। वे अनेक रीतियों से काम करते हैं। ज्योतिषी लोग पंचांग, जन्मपत्र आदि में ग्रहनक्षत्र देख कर, शकुनियां-स्वर तथा अन्य शकुनों को देख कर फल बताते हैं। चक्रों पर हाथ रखवा कर, रमल के पांसे डलवा कर हाथ देख कर, सामुद्रिक विधि से भविष्य बताया जाता है। आवेश में आये हुए देवी देवता भी बताते हैं, अमुक तिथि को इस प्रकार हवा चले, धूप निकले, पानी बरसे तो इसका वर्षा तथा फसल में भले बुरे होने का भविष्य किसान लोग अनुमान करते हैं। सांप के बोलने, गिरगिट के रंग बदलने, कुत्तों के रोने, आदि से आगे घटित होने वाली घटनाओं का कुछ लोग अन्दाज लगाया करते हैं।

भविष्य पूछने वालों में आमतौर से वे लोग होते हैं जिन्हें वर्तमान में कोई विशेष चिन्ता होती है और भविष्य में उस चिन्ता से छुटकारा पाकर किसी आशामय परिस्थिति में प्रवेश करना चाहते हैं। आमतौर से खोई हुई वस्तुओं का पता पूछने वाले, खोये हुए बच्चे या घर से भागे मनुष्य की खोज करने वाले, विवाह के इच्छुक, सन्तान के अभिलाषी, परीक्षा फल जानने की तलाश करने वाले, नौकरी चाकरी, तरक्की पूछने वाले व्यापार की तेजी मंदी सट्टा दड़ा आदि पूछने वाले होते हैं। जैसे वैद्य लोग बहुत दिन के अनुभव के बाद शकल सूरत और रंग ढंग देख कर बता देते हैं कि यह किस रोग का मरीज है और प्रायः बहुत अंशों में उनका अन्दाज ठीक निकलता है उसी प्रकार भविष्यवक्ता

लोग भी प्रश्नकर्त्ताओं के रंग ढंग, मुखमुद्रा आदि को देख कर यह सहज ही अन्दाज लगा लेते हैं कि वह क्या पूछना चाहता है। इस परख के आधार पर वे लोग सहज ही किसी निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं और प्रायः बिना पूछे ही बता देते हैं कि प्रश्नकर्त्ता क्या पूछने आया है। बहुत से भविष्यवक्ता उस सीमा तक पहुंचे हुए नहीं होते वे प्रश्नकर्त्ता के अपना उद्देश्य प्रकट करने पर ग्रह, गणित या अन्य क्रिया कलाप करके उत्तर देते हैं।

उत्तर देते समय भविष्यवक्ता लोग ज्योतिष पर ही निर्भर नहीं रहते वरन यह देखते हैं कि स्थिति क्या है? कैसी आशा है? जो परिस्थिति सामने है उसे देखते हुए किस प्रकार की सभावना है? इन अनुमानों की सूक्ष्म विवेचना करके जो उत्तर देते हैं उनके उत्तर प्रायः बहुत अंशो में ठीक उतरते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हर एक बुद्धिमान मनुष्य अपनी विवेचना शक्ति के द्वारा बारीकी से सोचता है और अपनी दैनिक बातों के संबध मे आगे की बातों का अन्दाज लगता है। और वह अन्दाज बहुत अंशों में ठीक भी होता है। यदि ठीक न हो तो उसका कारोबार ठप हो जाय। जिस बुद्धि-सूक्ष्मता के आधार पर चतुर पुरुष अपने व्यवहारिक कार्यों मे सफल होते हैं उसी बुद्धि सूक्ष्मता से ज्योतिषी लोग दूसरों के सम्बन्ध में अन्दाज लगाते हैं। वे अनुमान बहुत अंशों में ठीक उतरते हैं। ठीक उतरने पर वे सिद्ध समझे जाते हैं प्रशंसा के पात्र बनते है और धन लाभ करते हैं।

कभी २ बताये हुए उत्तर गलत ही हो जाते हैं क्यों कि अटकलें सदा ही ठीक नहीं उतरतीं। गलत निकली हुई

वालों को यह कह कर टाल दिया जाता है, कि "परमात्मा की इच्छा प्रबल है" "भाग्य में लिखे को कोई मेट नहीं सकता, बुरे दिन होने पर सोना पकड़ो तो मिट्टी हो जाता है. हमारी विद्या तो सत्य है पर उस विद्या के अनुसार निष्कर्ष निकालने वाले से भूल होजाने पर उत्तर गलत हो जाते हैं, हम मनुष्य हैं इसलिए हमसे भी भूलें होना स्वाभाविक है" इसके अतिरिक्त जन्म समय ठीक न मालूम होने, प्रश्न करने के लिए प्रातःकाल आदि शुभ समय में न आने, प्रश्न पूछने के लिए आने के साथ फल, फूल, मिष्टान्न, दक्षिणा आदि मांगलिक चीजें पर्याप्त मात्रा में न लाने इत्यादि बहाने आसानी से बनाये जा सकते हैं ।

सोना, चांदी, रुई, तिलहन, आदि की तेजी मंदी के सट्टे करने वालों का आधार कल्पना शक्ति ही तो होती है । वहां सिर्फ अन्दाज ही तो लगाया करते हैं कि आगे मंदी आवेगी या तेजी । जब उनका निशाना ठीक बैठ जाता है तो मालोमाल हो जाते हैं नहीं तो दिवालिया बनते देर भी नहीं लगती । जैसे को तैसे साथी मिलते रहते हैं । अकल की फाकियां उड़ाने वाले ज्योतिषी लोग उन्हें मिल जाते हैं "लगा तो तीर न लगा तो तुक्का बना रखा है ।"

इन तेजी मन्दी बताने वालों को चुनौती देते हुए एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति ने हमारे पास शर्तनामा भेजा है कि यदि कोई भविष्यवक्ता प्रति दिन केवल एक वस्तु की तेजी मन्दी ठीक बतला दिया करे तो उसे केवल एक प्रश्न बताने के लिए एक हजार रुपया प्रति दिन दिया जायगा । इसके लिए वे एक वर्ष का वेतन एक हजार रुपया प्रति दिन के हिसाब से जमा कर देंगे और शर्तनामा अदालत में

रजिस्ट्री करने को तैयार हैं। शर्तनामा हमने हिन्दुस्तान के प्रायः सभी ज्योतिषियों के पास भेजा है पर किसी ने भी उस चुनौती को अब तक स्वीकार नहीं किया है। और भविष्य में कोई उस चुनौती को स्वीकार करेगा ऐसी आशा भी नहीं हैं।

हम लोग देखते हैं कि यह लोग कुछ फीस या दक्षिणा लेकर तेजी मन्दी आदि बताते हैं। इससे स्पष्ट है कि पैसे की इच्छा तो उनको है। जब पैसे की आवश्यकता और इच्छा उनको है ही और तेजी मन्दी आदि जानते ही है तो वे स्वयं ही सटोरिये बन कर मालोमाल क्यों नहीं बन जाते? दूसरी बात यह है कि जब भविष्य को वे जानते भी हैं तो फिर अपने बारे में भी जानते होंगे कि हमें कब कितनी आमदनी होगी यदि यह मालूम ही है कि इतना पैसा हमको अमुक समय मिल ही जायगा तो फिर ज्योतिषी विद्या या और कोई व्यापार करने की उनको क्या आवश्यकता है? बैठे बैठे मौज करें जो भाग्य का होगा अपने आप आ जायगा। यह दोनों बातें बहुत ही सीधी एवं सरल हैं पर कोई भी भविष्यवक्ता इस मार्ग पर चलता दिखाई नहीं देता। इससे प्रतीत होता है कि किसी ज्योतिषी को स्वयं अपने ऊपर विश्वास नहीं है। ऐसी दशा में दूसरे विचार वाले लोग उन पर किस प्रकार विश्वास करें। यह एक प्रमुख समस्या है।

(८) दिव्य दर्शी तान्त्रिक ।

अपरम्पार गुप्त बातों को जानने का दावा करने वाले अनेकों व्यक्ति हमारे सम्पर्क में आये। मैस्मरेजम के नाम पर कितने ही लोग इस प्रकार के खेल करते हैं। एक बार हमने देखा कि एक मैस्मरेजम करने वाले ने एक लड़के को मंत्र बल से बेहोश किया। लड़के की आंखों पर पट्टी बांधी और ऊपर से कपड़ा डाल दिया। इसलिये किसी को यह सन्देह न रहे कि लड़का आंखों से देख सकता है। अब जादूगर ने व । उपस्थित लोगों के सम्बन्ध में उस लड़के से पूछना शुरू किया। चारों ओर जमा हुई दर्शकों की भीड़ में जादूगर चक्कर लगा रहा था। वह लोगों का रूमाल, घड़ी, अंगूठी, शरीर का कोई अंग, कपड़ा आदि पकड़ता और उसे छूते हुए लड़के से पूछता यह क्या है? लड़का तुरन्त उत्तर देता—यह अमुक चीज है। पुस्तकों के पृष्ठ, भाषा घड़ियों का टाइम, रुपयों के नम्बर आदि अनेक बातें पूछी गई और उनके ठीक २ उत्तर मिले। देखने वाले सभी लोग आश्चर्य में थे।

इस विद्या को जानने की हमें बड़ी उत्सुकता हुई। जिस जादूगर ने यह खेल दिखाया था उसके पीछे बहुत दिनों लगे रहे। पहले तो वह त्राटक आदि अभ्यासों में उलझा कर हमें टालता रहा, पर पीछे उसकी मुंह मांगी दक्षिणा देने पर सब भेद बताया। रहस्य यह था कि एक लड़के को एक पाठ याद करा ली जाती है। प्रश्न और उत्तर पहले से ही निर्धारित होते हैं। जैसे 'यह क्या है?' इस प्रश्न का उत्तर होगा 'रूमाल'। यह क्या चीज है? इस प्रश्न का उत्तर होगा—घड़ी। पूछने के शब्दों के थोड़े हेर फेर

करने से दर्शक तो कुछ समझ नहीं पाते पर वह लेटा हुआ लड़का भली प्रकार ध्यान रखता है और प्रश्न की भाषा के अनुसार उत्तर देता रहता है। ऐसी एक लम्बी प्रश्नोत्तरी हम अपनी "जादूगरी या छल" पुस्तक में दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त कोई भी चतुर व्यक्ति अपने ढग की नई प्रश्नोत्तरी घड़ सकता है। इस विधि से केवल वही बातें बतलाई जा सकती हैं जो पूछने वाले को मालूम हों। जिन बातों का उत्तर उसे मालुम न होगा उसका उत्तर वह झूठ मूठ बेहोश होने का बहाना करके पड़ा हुआ लड़का भी न दे सकेगा।

नाखून पर स्याही लगा कर उसमें बालकों को देवी देवता दिखाने वाले तथा उनसे बात करा के प्रश्नों का उत्तर देने वाले हमने देखे हैं। इसी कार्य को कुछ लोग एक विशेष प्रकार की अगूठी से, त्रिकाल दर्शी दर्पण नामक एक काली बिन्दी लगे हुये शीशे से भी करते हैं। जिस बालक के ऊपर यह प्रयोग किया जाता है उसे प्रयोग करने वाला अपनी सिद्धाई की धौंस के हाथकंडे बता कर डरा देता है और बेचारा बालक जैसा कहो वैसा हाँ हाँ करने लगता है। यदि इस प्रकार दिखाया जाना सम्भव हो तो बड़ी उम्र के चतुर एवं निडर बालकों पर भी वह प्रयोग होना चाहिये पर ऐसे बालकों से ये लोग सदा ही बचते रहते हैं।

चोर पकड़ने के लिए चावल पढ़कर देना आदि तरीके एक प्रकार की धमकी है जिससे डर कर लोग चोरी कबूल कर लेते है। एक चोर पकड़ने वाला तान्त्रिक ऐसा करता था कि जिन लोगों पर चोरी का शुबा होता था उन सबको बुलाता था और एक कोठे में काले रंग से पुना हुआ देवता

बन्द देता था। खुद उस कोठे के बाहर बैठ जाता था, अब जिस पर शुबा होता इनको एक एक करके कोठे में भीतर भेजता और उस देवता का स्पर्श करने को कहता। जो देवता को छूकर वापिस लौटता उसका हाथ सूंघ कर वह तान्त्रिक बताता कि यह चोर है या नहीं। इस तरकीब से वह असली चोर को पकड़ अलग लेजाकर चोरी इस शर्त पर कबूल करा लेता कि ली हुई चीज वापिस कर दे तो उसका नाम प्रकट न किया जायगा। चोर उस चीज को तान्त्रिक को वापिस कर देता, और वह उसे दे देता जिसकी कि वह चीज थी इस रीति से उसे बहुत यश और धन मिलता।

इसका रहस्य यह था कि देवता पर कच्चा लाल रंग पुता हुआ था जो उसे छूता था उसके हाथ में लाल रंग का कुछ न कुछ दाग लगा होता था। हाथ सूंघने के बहाने वह देख लेता था कि दाग है कि नहीं दाग होने पर निर्दोष समझा जाता था। पर जिस आदमी ने वास्तव में चोरी की होती थी वह देवता को इस ख्याल से छूता न था कि यहां कोई देखने वाला तो है नहीं इसलिये न छुऊं तो ही ठीक है। वह बिना छुए लौट आता था। उसके हाथ पर रंग का दाग न होता था, तान्त्रिक अकेले में उससे कहता था कि चोर तुम्हीं हो, गुनाह मान लो चीज लौटा दो नहीं तो नाम प्रकट कर दिया जायगा। चोर गिड़गिड़ा जाता और बदनामी से बचने के लिये चीज देकर अपना पीछा छुड़ाता। परन्तु यह तरकीब भी सब नहीं चल सकती। केवल उन्हीं पर चलती है जो चोर, देवता और मन्त्र शक्ति पर विश्वास करते हों।

आंखों के जरिये या किसी अन्य प्रकार से किसी

आदमी के सम्बन्ध में बहुत सी जानकारी एकत्रित करना फिर उससे अचानक मुलाकात करके उन सब बातों को विद्या बल से बताना, इस रीति से कितने ही आदमी लोगों को आश्चर्य में डाल देते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं।

अनेकों प्रकार के आश्चर्य

ऊपर की पंक्ति में कुछ चमत्कार का वर्णन किया है। इस तरह से सैकड़ों चमत्कार हमने देखे और उनके भेद मालूम किये हैं। जिनमें से अनेकों का तो अब स्मरण भी नहीं रहा है। जो याद है उनमें दो चार और लिखते हैं।

(१) एक बार एक गांव में एक जमीदार के यहां एक महात्मा जी पधारे। जमीदार साहब ने बड़ी आवभगत की। महात्मा जी के बारे में यह समाचार फैलाया गया कि वे बड़े पहुंचे हुए सन्त हैं जो कहो सो मगां सकते हैं। रात को जब गांव वाले बहुत से लोग एकत्रित बैठे हुए थे तो एक ग्रामीण ने कहा कि महाराज जी गरम खीर मंगाइये। महात्मा जी ने आंखें बन्द करके मन्त्र पढ़ा और फिर साव-धान होकर कहा--जाओ चौपाल में खीर आ गई। लोगों ने जाकर देखा तो सचमुच हांडी भरी खीर रखी थी। वह सबको प्रसाद रूप में दी गई। लोग आश्चर्य कर ही रहे थे कि एक काछी चिल्लाता हुआ आया कि चूल्हे पर रंधती हुई खीर की हांडी उड़ गई। उसे हांडी दिखाई गई तो उसने कहा यह मेरी ही हांडी है और मेरी आंखों के सामने चूल्हे पर से आकाश को उड़ गई थी। इस घटना के बाद योगीराज की भारी पूजा हुई। दस पन्द्रह दिन में करीब दो हजार रुपया भेंट का आ गया।

बहुत दिन बाद हमें पता चला कि जमींदार, चोर मंगाने वाला, काजी इन तीनों को साधु ने उस षड्यंत्र में शामिल किया है। उनकी पगड़ी रखी गई थी भेंट में से इन तीनों ने भी हिस्सा बांटा था। वास्तव में चोर जमींदार के घर में घुसी थी और लोगों के एकत्रित होने से पूर्व ही चौपाल में छिपाकर रख दी गई थी।

(२) एक साधु जी महाराज कहीं बाहर से आये और एक गांव में मरघट के पास रहने लगे, उनकी निस्पृहता से गांव वाले बहुत प्रभावित हुए और भोजन सामिग्री उनके लिए भेजने लगे। एक दिन जब कि गांव के बहुत से लोग बैठे हुये थे। कोई राहगीर उधर से निकला, वह साधु जी के पास बैठ गया और इधर उधर की बातें करने लगा। बातों ही बातों में साधु के प्रति उसने कुछ कड़ुए और अपमान जनक शब्द कह दिए इस पर साधु ने क्रुद्ध होकर श्राप दिया कि 'तू इसी समय अन्धा हो जायगा,। वह अन्धा हो गया कोई एक सप्ताह तक वह पास के गांव में लकड़ी के सहारे टटोलता और दुख गाथा सुनाता फिरा। गांव गांव जाकर वह यह कहता था कि पंच लोग चलकर महात्मा जी को समझाकर श्राप वापिस लेने को जोर दें तो ही उसका जीवन सुधर सकता है। अन्धे पर दया करके, करीब तीन गांव के पंच इकट्ठे हुए, सबने बहुत विनय करके महात्मा जी को मनाया। उन्होंने कमण्डल से जल लेकर उसके ऊपर डाला, और उसके आंखों में ज्योति वापिस आ गई। इस चमत्कार से ग्रामीण बहुत प्रभावित हुए। थोड़े दिन बाद स्वामीजी ने भण्डारा करने की इच्छा

प्रकट की जिसके लिए गावों से सैकड़ों रुपया प्राप्त हुआ।

पता लगाने पर मालूम हुआ कि जो आदमी अन्धा हुआ था वह आदमी बाबाजी का साथी था साधक मिल का जोड़ा बनाकर कितने ही स्थानों पर यह लोग इस घटना की पुनरावृत्ति कर चुके हैं।

(३) एक गांव में एक ठाकुर के कुए के समीप आकर एक महात्मा जी दो चार दिन ठहरे। ठाकुर ने उनकी आवभगत की। जाते समय उन्होंने वरदान दिया कि इस मेरे कुए के जल का जो आचमन करेगा उसका कैसा ही कठिन या डरावना रोग क्यों न हो अच्छा हो जायगा। यह समाचार फैलते ही लोगों की भीड़ लगने लगी। एक अन्धा आदमी अच्छा हुआ, एक गूंगा बोलने लगा, यह घटना सबके सामने हुई। एक महीने तक भारी मेला उस कुए पर लगा रहा। कथा कीर्तन की धूम रही। ठाकुर ने घोषणा की कि महात्मा जी के आशीर्वाद रूपी इस कुए को पक्का बनवाया जायगा और वहां एक धर्मशाला बनेगी, इसके लिए भेंट दक्षिणा दी जाय। बहुत रुपया जमा हुआ, कुआ और धर्मशाला तो पक्के नहीं बने पर ठाकुर का दरिद्र दूर हो गया।

पता लगाने पर मालूम हुआ कि जो अन्धे और बहरे अच्छे हुए थे वे बिलकुल अच्छे भले थे। ठाकुर चोरी करता था वह उसके दूरवर्ती साथी थे जिन्हें वहां कोई जानता न था। बाद को इन्हीं दोनों को बीस तीस कोस गाँवों में प्रचार के लिए भेजा गया और इन लोगों ने अफवाह फैलाई कि अमुक स्थान पर महात्मा जी के

आशीर्वाद से ऐसा करामाती कुआ निकला है जिससे पचासों अन्धे और हजारों बीमार अच्छे हो चुके हैं। बात अफवाह एक से दस में और दस से सौ में फैल गई देहातों में ऐसी बातों पर विश्वास भी जल्दी हो जाता है। लोग वहां के लिए दौड़ पड़े। ठाकुर का एासा ठीक पड़ा उसके पौ बारह हो गए।

(४) मद्रास प्रान्त में एक जगह एक बड़ी कोठी में एक राजसी महात्मा रहते थे। वे श्रीकृष्ण जी के प्रत्यक्ष दर्शन कराते थे। उनकी कोठी के भीतरी भाग में एक संगमरमर का छोटा सा तालाब भरा रहता था, भगवान इस तालाब के जल में चलते फिरते और हंसते बोलते थे। रूप और सजावट बोलक कृष्ण से मिलती जुलती थी, धनी लोगों को बड़े अहसान एवं नाज नखरे के साथ बड़ी भक्ति पूर्वक दर्शन कराए जाते और लम्बी लम्बी रकमें दान में ली जाती थीं।

भेद ढूंढने पर मालूम हुआ कि तालाब का पेंदा मोटे किन्तु स्वच्छ कांच का बना हुआ है। उसके नीचे गुफा की तरह खाली जगह है। उस खाली जगह में आने के लिये रास्ता है। एक सात आठ वर्ष के स्वरूपवान लड़के को वस्त्राभूषणों से खूब सजाकर उस नीचे के तहखाने में भेज देते थे लड़का उसमें इधर उधर फिरता था और दर्शकों की ओर हंसता मुस्कराता तथा कुछ प्रसन्नता एवं आश्वासन सूचक शब्द कहता था। कांच के ऊपर पानी भरा होने से यह दृश्य ऊपर से देखने पर ऐसा मालूम पड़ता था। मानों जल में मछली की भांति श्रीकृष्ण जी एक फिर रहे हों। भक्त लोग इस दृश्य को देख कर

थोड़ा सफेद बूरा भी वहां बिछाया जाता था पूजा की थाली में तीन चार लोंगें तेजाब में डुबाकर पहले से ही रख ली जाती थी। उंगलियों को घी से चुपड़ लिया जाता था ताकि तेजाब की डूबी हुई लोंग छूने से कुछ हानि न हो।

पण्डित जी मन्त्रोच्चारण करते थे और जब अग्नि प्रकट करने का अवसर आता था तो उन तेजाब में डूबी हुई लोंगों को हवन कुण्ड में ऐसी जगह छोड़ते थे कि जहां पुटास और शकर बिछी रहती थी तेजाब का स्पर्श होते ही बारूद जल उठती थी। बूरा उसके जलने में और भी सहायता देता था। कुण्ड में जहां तहां कपूर छोड़ रखा जाता था जो अग्नि को पकड़ लेता था और समिधायें जलने लगती थीं। इस प्रकार अग्नि देवता का मत्र बल से प्रकट करने का उन पण्डित जी को श्रेय मिल जाता था।

निरर्थक मृगतृष्णा।

जिन सिद्धियों के लिए लोग लालायित रहते हैं और अपनी व्यक्तिगतइच्छा और अभिलाषा केलिए उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। उनके संबध में आइए सार्वजनिक हित की दृष्टि से, बड़े दृष्टिकोण से विचार करें कि यदि सिद्धियां सर्व सुलभ होजांय तो संसार में सुविधा की वृद्धि होगी या असुविधा की।

मानलीजिए कि अपने जीवन की अवधि लोगों को मालूम होजाय, यह पता चल जाय कि हमारी मृत्यु, कब? किस दिन? कहां? किस प्रकार होगी? तो उस मनुष्य का जीवन बड़ा विचित्र होजायगा। अमुक दिन मरूंगा, इससे पहले नहीं मर सकता यह निश्चय होजाने पर वह बड़ी से

को वह वस्तु मिलना कठिन होजायगी। इसी प्रकार
मालूम होजाय कि यह चीज मंदी होने वाली है तो
वेचना तो सब चाहेंगे, लेगा कोई नहीं। जो वस्तु मदी
वाली होगी उसका उत्पादन और आयात ही कोई न क
फलस्वरूप उस वस्तु का मिलना दुर्लभ होजायगा। सब
को तेजी मंदी का पता चलने लगे तब तो व्यापार नाम
कोई वस्तु ही न रह जायगी और तेजी मदी केवल
कोपों में ही लिखी मिलेगी। इतना न भी हो केवल
एक दो मनुष्यों को भी तेजी मदी का ठीक ज्ञान हो
एक दिन मे अरबों खरबों रुपया एकत्रित कर सकते
जिसे तेजी मंदी का ठीक ज्ञान होगा वह संसार की स
संपदा पर चंद दिनों के अन्दर कब्जा कर लेगा। ऐसी
उत्पन्न होने से संसार का साधारण क्रम बिलकुल उलट
होजायगा। परमात्मा अपनी दुनियां को इस प्रकार
पलट नहीं करनो चाहता इस लिए उसमें तेजी मंद
सच्चा ज्ञान किसी ज्योतिषी, सिद्ध या सटोरिये को नहीं दि

इसी प्रकार जितनी भी सिद्धिया हैं वे यद्यपि आ
दीखती हैं पर अन्ततः मनुष्य जाति के लिए घोर हानिप
ही सिद्ध होंगी। इसलिए परमात्मा ने उन्हें सर्व साध
के लिए सुलभ नहीं किया है। जिन्हें वे सिद्धियां मिल
वे वही लोग होते हैं जो पूर्ण परमात्म तत्व को प्राप्त
लेते हैं और विश्व व्यवस्था में गड़बड़ करने के लिए उ
प्रयोग नहीं करते। इसलिए सिद्धियों के फेर मे न पड़
हमें स्वाभाविक सत्य, प्रेम, न्याय मय जीवन बताना च
यही जीवन की सब से बड़ी सफलता और परम सिद्धि

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें:—

(१) मैं क्या हूँ ।=) (२) सूर्य चिकित्सा विज्ञान ।=)

(३) प्राण चिकित्सा विज्ञान ।=) (४) परकाया प्रवेश ।=)

(५) स्वस्थ और सुन्दर बनने की विद्या ।=)

(६) मानवीय विद्युत के चमत्कार ।=)

(७) स्वर योग से दिव्य ज्ञान ।=) (८) भोग में योग ।=)

(९) बुद्धि बढ़ाने के उपाय ।=), (१०) धनवान् बनने के गुप्त रहस्य ।=)

(११) पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि ।=)

(१२) वशीकरण की सच्ची सिद्धि ।=)

(१३) मरने के बाद हमारा क्या होता है ? ।=)

(१४) जीव जन्तुओं की बोली समझना ।=)

(१५) ईश्वर कौन है ? कहां है ? कैसा है ? ।=)

(१६) क्या धर्म, क्या अधर्म ।=) (१७) गहना कर्मणोगति ।=)

(१८) जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश ।=)

(१९) पञ्चाध्यायी धर्म शिक्षा ।=) (२०) शक्ति संचय के पथ पर ।=)

(२१) आत्म गौरव की साधना ।=) (२२) प्रतिष्ठा का उच्च सोपान ।=)

(२३) मित्र भाव बढ़ाने की कला ।=)

(२४) आंतरिक उल्लास का विकास (२५) आगे बढ़ने की तैयारी =)

(२६) अध्यात्म धर्म का अवलम्बन ।=)

(२७) ब्रह्मविद्या का रहस्योद्घाटन ।=)

(२८) ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग ।-)

(२९) यम और नियम ।=) (३०) आसन और प्राणायाम ।=)

(३१) प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।=)

(३२) तुलसी के अमृतोपम गुण ।=)

(३३) आकृति देखकर मनुष्य की पहचान ।=)

(३४) मैस्मरेज़म की अनुभव पूर्ण शिक्षा ।=)